www.thearyasamaj.org

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

अष्टांगयोगादेव तु आत्मशुद्धिः

राष्ट्र,धर्म व मानवता के सबल रक्षक–
वेद, यज्ञ–योग–साधना केन्द्र आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़ की मासिक पत्रिका

अक्टूबर 2013 मूल्य 15 रू.

आत्म–शुद्धि–पथ

मासिक

47वां आश्रम स्थापना दिवस समारोह सम्पन्न

(विवरण पढ़े पृष्ठ 6 पर)

श्री राजेश जी जून (जिला वाईस चेयरमैन), श्री रवि खत्री (चेयरमैन नगर परिषद्, बहादुरगढ़), श्री सतीश छिकारा जी (चेयरमैन जिला परिषद्, झज्जर) तथा श्री अशोक गुप्ता जी (पूर्व चेयरमैन, नगर परिषद्, बहादुरगढ़) को स्मृति चिन्ह व पटखा द्वारा सम्मानित करते हुए करते स्वामी धर्ममुनि जी दुग्धाहारी, श्री ईशमुनि जी, स्वामी रामानन्द जी, श्री सत्यपाल जी वत्स, आचार्य मैत्रेय जी तथा श्री सोमनाथ जी आर्य

ओ३म् ओ३म्

आत्मशुद्धि आश्रम संस्थापक कर्मयोगी पूज्य श्री आत्मस्वामी जी महाराज

राष्ट्र, धर्म, मानवता के सबल रक्षक, वेद, यज्ञ,
योग-साधना केन्द्र, आत्मशुद्धि आश्रम के मुख्याधिष्ठाता

पूज्यपाद स्वामी धर्ममुनि जी महाराज के

78वें जन्मदिवस के शुभावसर पर

बृहद् यज्ञ सुर और संगीत का भव्य आयोजन पर

बुधवार, 20 नवम्बर 2013 मध्याह्नोपरान्त 2:30 बजे से 6:30 तक

आप सभी सपरिवार सादर आमंत्रित हैं।

आत्मशुद्धि-पथ के नये आजीवन सदस्य बनें

847

श्री जगवीर सिंह (बाबा जी)
ग्राम + पोस्ट- वैना,
अलीगढ़, यू.पी.

बच्चों को वस्त्र देते हुए श्री कन्हैया लाल जी आर्य एवं श्रीमती रेखा जी-श्री अनिल वरेजा परिवार

श्री युवराज छिल्लर (नगर पार्षद) को स्मृति चिन्ह देते हुए आचार्य राजहंस मैत्रेय, स्वामी धर्ममुनि जी, श्री ईशमुनि जी, श्री सत्यपाल वत्स

प्रिय बन्धुओं! मास अक्टूबर में अधिक से अधिक संरक्षक सदस्य एवं आजीवन सदस्य बनकर आगामी नवम्बर अंक को अपने चित्र व नाम से पत्रिका को सुशोभित करें। सभी सदस्यों से निवेदन है कि वार्षिक शुल्क (मनीऑर्डर/ड्राफ्ट) द्वारा शीघ्र भेजें अथवा इलाहाबाद बैंक कोड संख्या IFSC-A0211948 में खाता संख्या 20481973039 में सीधे जमा कर सकते हैं। जिससे पत्रिका आपके पास निरन्तर पहुँचती रहे।

– व्यवस्थापक

www.thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

आत्म-शुद्धि-पथ (मासिक)

आश्विन-कार्तिक सम्वत् 2070 अक्टूबर 2013

सृष्टि सं. 1972949113 दयानन्दाब्द 190

वर्ष-12) संस्थापक-स्वर्गीय पूज्य श्री आत्मस्वामी जी (अंक-10

(वर्ष 43 अंक 10)

प्रधान सम्पादक

स्वामी धर्ममुनि 'दुग्धाहारी'
आचार्य राजहंस मैत्रेय

❖

सह सम्पादक

स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती, डॉ. मुमुक्षु आर्य

❖

परामर्श दाता: गजानन्द आर्य

❖

कार्यालय प्रबन्धक

आचार्य रवि शास्त्री
(8529075021)

❖

उपकार्यालय प्रबन्धक

ईशमुनि (9991251275, 9812640989)
अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम
खेड़ा खुर्रमपुर रोड, फर्रुखनगर, गुडगांव (हरि.)

❖

व्यवस्थापक: चन्द्रभान चौधरी

❖

सदस्यता शुल्क

संरक्षक	: 7100 रुपये
आजीवन	: 1500 रुपये (15 वर्ष के लिए)
पंचवार्षिक	: 700 रुपये
वार्षिक	: 150 रुपये
एक प्रति	: 15 रुपये

विदेश में

वार्षिक : 20 डालर आजीवन : 350 डालर

कार्यालय : आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़
जिला-झज्जर (हरियाणा) पिन-124507
दूर. : 01276-230195 चल. : 9416054195
E-mail : atamsudhi@gmail.com,
rajhansmaitreya@gmail.com

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ सं.
विविध समाचार	4
आश्रम समाचार	6
वेद सन्देश	8
सम्पादकीय : आत्म उन्नति का मार्ग	9
बौद्धों के क्षणिकवाद का खण्डन	10
मन और मनोनिग्रह	12
देशद्रोही कौन?	14
सर्वगुण सम्पन्न श्री रामचन्द्र जी का जीवन-चरित्र	15
समग्र क्रान्ति के अग्रदूत महर्षि दयानन्द	21
क्या आप जानते हैं?	23
गृह की शोभा गृहिणी से ही है	25
हंसो और हंसाओं	27
इन्सान की बात की है	27
सत्यार्थ प्रकाश प्रश्नोत्तरी भूमिका के अनुसार प्रश्नोत्तर	28
बिना विचारे जो करे, सो पाछे पछताए	28
गीत-प्रभु की शरण में	28
मेरी विदेश यात्रा	30
वंदे मातरम की शब्द शक्ति	31
दान सूची	33

विज्ञापन दर

पिछला कवर पृष्ठ	5,100 रुपये
अंदर का कवर पृष्ठ	3,100 रुपये
पूरा पृष्ठ अंदर	2,100 रुपये
आधा पृष्ठ	1,100 रुपये
चतुर्थ भाग	600 रुपये

समस्त सम्पादक मण्डल अवैतनिक है। 'आत्मशुद्धिपथ' में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का न्यायक्षेत्र बहादुरगढ़, जि. झज्जर होगा।

www.thearyasamaj.org

शक्तिवेश जी का जन्मदिवस सम्पन्न

वैदिक सत्संग मंडल झज्जर के तत्वावधान में स्वामी शक्तिवेश जी का जन्म दिवस मोहल्ला टिल्ला झज्जर में बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर यज्ञ भजन, प्रवचन का आयोजन किया गया। जिसमें यज्ञ ब्रह्म श्री आनन्देव शास्त्री, यजमान कुमारी नम्रता व देवेन्द्र आर्य थे। कार्यक्रम के संयोजक पं. जयभगवान आर्य रहे व कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्री रमेश योगाचार्य थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता पं. रमेशचन्द्र कौशिक अध्यक्ष वैदिक सत्संग मण्डल झज्जर ने की। मंच संचालक श्री सुभाष आर्य ने की। इस अवसर पर सभी वक्ताओं ने स्वामी शक्तिवेश जी द्वारा आर्यसमाज के लिए किए गए कार्यों की सराहना की और उनके दिखाए रास्ते पर चलने का आहवान् किया। इस अवसर पर पं. रमेश चन्द्र कौशिक, विवेक आर्य व पं. जयभगवान आर्य ने मधूर भजन प्रस्तुत किए। बच्चों द्वारा भी अनेक कविताएं भजन व भाषण का कार्यक्रम रखा गया। बच्चों को वैदिक साहित्य देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के पश्चात् भण्डारे का आयोजन किया गया जिसकी प्रबन्ध व्यवस्था श्री वेदप्रिय आर्य ने बड़े सुन्दर ढंग से की गई।

चुनाव सम्पन्न

आर्य वीर नेत्र चिकित्सालय, गुड़गांव- प्रधान- श्री भारत भूषण आर्य, **वरिष्ठ उपप्रधान-** मा. सोमनाथ आर्य, **उपप्रधान-**श्री सोमनाथ मलहोत्रा, **महामन्त्री-**श्री प्रवीण मदान, **मन्त्री-**श्री नरेन्द्र आर्य, **उपमन्त्री-**श्री राजेश आर्य, **उपमन्त्री-**श्री यशपाल कमरा, **उपमन्त्री-** श्री जवाहर लाल मनचन्दा, **कोषाध्यक्ष-** श्री शिवदत्त आर्य, आयुर्वेदिक विभाग कोषाध्यक्ष- श्री महेन्द्र प्रताप आर्य, भण्डारी- श्री राजीव आर्य, लेखा निरीक्षक- श्री सत्य प्रकाश वीर

❑❑❑

केन्द्रीय आर्य सभा, गुड़गांव- प्रधान- मा. सोमनाथ, **उपप्रधान-** श्री चन्द्र प्रकाश गुप्ता, **महामन्त्री-** श्री प्रभु दयाल चुटानी, **मन्त्री-** श्री बलदेव कृष्ण गुगलानी, **कोषाध्यक्ष-**श्री नरेन्द्र आर्य, **प्रैस सचिव-** श्री ओम प्रकाश चुटानी, **भण्डारी-** श्री नरेन्द्र तनेजा, **लेखा-निरीक्षक-** सी.आर. कटारिया।

जन्मदिवस मनाया गया

श्री कन्हैया लाल जी आर्य, गुड़गांव की प्रेरणा से श्रीमती रेखा वरेजा एवं श्री अनिल वरेजा, मदनपुरी, गुड़गांव ने अपने पुत्र नेवान वरेजा का जन्म दिवस आत्मशुद्धि आश्रम में चल रहे यज्ञ में यजमान बन कर प्रसन्नता और उत्साहपूर्वक मनाया। इस अवसर पर बालक को आशीर्वाद दिया गया। बालक के माता-पिता ने आश्रम के सभी छात्रों के लिए 175 मीटर कुर्ता पाजामा का कपड़ा, फल एवं प्रसाद प्रदान किया। आश्रम की ओर से परिवार को सभी शुभकामनाओं के साथ हार्दिक आभार।

❑❑❑

श्री आर.पी. श्रीवास्तव एवं श्रीमती सुभाषिणी श्रीवास्तव एच.एन.जी. बहादुरगढ़ ने अपने पौत्र आयुष्मान आरव व सुपुत्र श्री रितेश श्रीवास्तव व श्रीमती रूचि श्रीवास्तव का 12.09.2013 को एवं अपनी पौत्री आरिफा श्रीवास्तव का जन्म दिवस 14.09.2013 को यज्ञ हवन के साथ आत्म शुद्धि आश्रम में बड़ी प्रसन्नता के साथ मनाया गया। इस अवसर पर बालकों के दीर्घ जीवन हेतु जन्म दिवस की आहुतियां देकर शुभकामनाएं एवं आशीर्वाद दिया गया। श्रीमती सुभाषिणी एवं श्री आरिफा श्रीवास्तव आत्मशुद्धि आश्रम को स्नेह पूर्वक सहयोग करते रहते हैं। बच्चों के जन्म दिवस पर सभी परिवार की ओर से सभी के लिए स्वादिष्ट भोजन की व्यवस्था की गयी। हम इनकी सुख-शान्ति एवम् समृद्धि की कामना करते हैं।

यज्ञ-भजन-प्रवचन अभिनन्दन समारोह

झज्जर, यज्ञ समिति झज्जर के तत्वावधान में महर्षि दयानन्द शिक्षण केन्द्र झज्जर में आर्य समाज झज्जर के उपप्रधान महाशय रतीराम आर्य के संयोजकत्व में यज्ञ-भजन-प्रवचन अभिनन्दन समारोह हर्षोल्लासपूर्वक सम्पन्न हुआ। अनमोल, टींक, ज्योति, राहुल, उमेश आदि बच्चों ने हवन सम्पन्न कराया। श्रीमती सोनिया एवं श्री मुकेश आर्य मुख्य यजमान रहें। भट्टी गेट मौहल्ले के सैकड़ों बच्चों ने समाज में सौहार्दपूर्ण वातावरण की कामना की पूर्ति के लिए हवनकुण्ड में आहुतियां प्रदान की।

www.thearyasamaj.org

आने वाली पीढ़ियां प्रेरणा लेती रहेंगी जिलेसिंह उर्फ बाबा तेजनाथ जी के जीवन से

जिले सिंह उर्फ बाबा तेजनाथ जी भले ही आज हमारे बीच में नहीं हैं। वह 19.09.2013 को अपनी सांसारिक यात्रा पूरी करके अमरपुरी को कूच कर गए मगर उनकी यादें व उनके द्वारा किए गए नेक कार्य सदैव उनकी याद दिलाते रहेंगे। जिलेसिंह भले ही अनपढ़ थे मगर उन्होंने शुरु से ही इस समाज को सेवा का उजियारा दिया और हर कार्य को उसमें समाकर किया। हरियाणा के जिला झज्जर के गांव बरहाणा में चौ. चन्दन सिंह अहलावत के घर माता छोटो देवी के तीन बेटों में यह बीच के थे, इनकी 2 बहनें भी थी। जिलेसिंह ने पहले जमींदारा किया व बाद में उन्होंने तूड़ा का सफल व्यापार किया और अपने पांच बेटों को पढ़ा लिखाकर इस काबिल बनाया कि उनके पांचों बेटों का राष्ट्र निर्माण में अहम योगदान है। उनका बड़ा बेटा श्री ओम अहलावत जहां जिला किसान कांग्रेस का अध्यक्ष है वहीं श्री ओम निःस्वार्थ समाज सेवी भी हैं। जिलेसिंह का एक बेटा कृष्ण ब्रह्मचारी अन्तर्राष्ट्रीय पहलवान है। वहीं उनके तीन बेटे सफल कारोबारी हैं। जिलेसिंह ने छः पीढ़ी देखी और तीन पीढ़ी को उन्होंने बहुत ही अच्छे संस्कार दिए। उनकी पत्नी चम्पा देवी हमेशा उनकी ताकत बनी और उनका पूरा साथ दिया जिलेसिंह के बेटों ने जैसे ही घर परिवारों की जिम्मेदारी समझी वैसे ही उन्होंने 22 वर्ष पहले संन्यास ले लिया और कपूरी की पहाड़ी पर भजन करने वाले सिद्ध महात्मा बाबा पालनाथ जी महाराज से दीक्षा लेकर वह संन्यासी हो गए। काबिले गौर है कि जिले सिंह को बाबा पालनाथ जी महाराज ने तीज के त्यौहार के दिन दीक्षा दी थी इसलिए उनका नाम तेजा पड़ा। संन्यास लेने के बाद वे घर नहीं रहे। वह या तो तीर्थों के भ्रमण पर रहते थे या फिर उनके बेटों ने उनके लिए बहादुरगढ़ में बालौर रोड व शिव मन्दिर व श्री बाला जी मन्दिर का निर्माण करवाया, वह उन्हीं मन्दिरों में रहकर भजन किया करते थे। वैसे वह बचपन से ही आर्यसमाज से जुड़ गए थे और समाज सेवा में उनकी बचपन से ही रूचि थीं उन्होंने अपने बेटों व पोतों को भी निःस्वार्थ सेवा शिक्षा दी व खुद भी तमाम जीवन लोगों की सेवा की व भगवान का भजन किया। यह उन्होंने अपना शरीर छोड़ते समय सिद्ध भी कर दिया। उन्होंने अपना शरीर बुद्ध पूर्णिमा के दिन छोड़ा। उनके गुरु बाबा पालनाथ जी ने भी अपना शरीर पूर्णिमा के दिन ही छोड़ा था। यहाँ यह सिद्ध होता है कि वह पूर्ण गुरु के पूर्ण शिष्य थे। उनकी सत्रहवीं 4 अक्टूबर अमावश को उनके बहादुरगढ़ स्थित आवास पर चम्पा गार्डन में आचार्य विजयपाल जी, स्वामी धर्ममुनि जी दुग्धाहारी, आचार्य राजहंस मैत्रेय, आचार्या राजनमान गुरुकुल लोवां कलां के सानिध्य में शान्ति यज्ञ के साथ सम्पन्न हुई। जिसमें श्री स्व. जिले सिंह एवं परिवार के सम्बन्ध में विशेष प्रकाश डाला। इस अवसर पर भण्डारे का आयोजन हुआ जिसमें अनेक सन्त महातमा व तमाम हरियाणा एवं आसपास के राज्यों के लोगो ने भाग लिया। उनसे समाज की आने वाली पीढ़ियां जिलेसिंह उर्फ बाबा तेजनाथ जी के जीवन से भी प्रेरणा लेती रहेगी। आत्मशुद्धि परिवार की तरफ से इस महान् आत्मा को शत्-शत् नमन।

आश्रम द्वारा प्रकाशित महत्त्वपूर्ण साहित्य अवश्य पढ़ें

यज्ञ समुच्चय	मूल्य : 50 रु.
वैदिक सूक्तियों पर दृष्टान्त	मूल्य : 25 रु.
स्वस्थ जीवन रहस्य	मूल्य : 20 रु.
फल-सब्जियों द्वारा रोग नष्ट	मूल्य : 20 रु.
आत्मशुद्धि के सरल उपाय	मूल्य : 15 रु.
विद्यार्थियों के लाभ की बातें	मूल्य : 15 रु.
वृहद् जन्मदिवस पद्धति	मूल्य : 20 रु.
चाणक्य-दर्पण	मूल्य : 25 रु.
कल्याण-पथ	मूल्य : 20 रु.
प्राणायाम-विधि	मूल्य : 10 रु.
स्वादिष्ट प्रयोग चतुष्टय	मूल्य : 15 रु.

प्राप्ति स्थान : आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, जि. झज्जर (हरियाणा) पिन-124507

दूरभाष : 01276-230195 **चलभाष** : 09416054195

www.thearyasamaj.org

आत्मशुद्धि आश्रम का 47वां स्थापना दिवस समारोह ऋग्वेद पारायण यज्ञ, योग साधना शिविर तथा युवा जागृति योग, महिला, चरित्र निर्माण सम्मेलन सफलतापूर्वक सम्पन्न

शनिवार दिनांक 21 सितम्बर से बुधवार 2 अक्टूबर 2013 तक ऋग्वेद पारायण यज्ञ, योग साधना शिविर तथा अन्य सम्मेलनों के साथ उत्साह और सफलतापूर्वक आश्रम स्थापना समारोह सम्पन्न हो गया। इस अवसर पर अनेक संन्यासी, विद्वान, भजनोपदेशक, राजनेता, दानी एवं सामाजिक कार्यकर्त्ता पधारे, जिसमें सैकड़ो लोगों ने यज्ञ, योग, आसन प्राणायाम द्वारा विशेष लाभ उठाया। आश्रम द्वारा संचालित कार्यक्रमों की सभी ने सराहनीय प्रशंसा की।

ध्यान साधना शिविर- 21 सितम्बर से प्रातः 5 बजे से 6 बजे तक आचार्य राजहंस मैत्रेय द्वारा योग साधना का कुशलतापूर्वक योगाभ्यास कराया गया तथा योग विषयक प्रश्नो का यथोचित उत्तर दिये गए। 6 बजे से 7 बजे तक योगनिष्ठ सत्यपाल जी वत्स द्वारा आसन प्राणायाम को उत्साहपूर्वक अभ्यास कराया गया जिससे श्रद्धालु विशेष रूप से लाभान्वित हुए।

ऋग्वेद पारायण यज्ञ-- 21 सितम्बर प्रातः 8 बजे से पूज्य स्वामी धर्ममुनि जी के सानिध्य में आचार्य विद्यादेव (टंकारा) के कुशल ब्रह्मत्व में यज्ञ चला। वेद पाठ गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा सुन्दर ढंग से किया गया। ऋग्वेद पारायण यज्ञ की मुख्य यजमान श्रीमती प्रेमो देवी, मूर्ति देवी, श्रीमती सुकृति देवी तथा गायत्री देवी पूर्णाहुति तक रहीं। यज्ञ का व्यय मुख्य यजमानों द्वारा दिया गया। ये आश्रम की विशेष सहयोगी रही हैं। प्रातः सायं यज्ञ में अन्य यजमान भी सुशोभित होते रहे। यज्ञोपरान्त दोनो समय, स्वामी रामानन्द, आचार्य खुशीराम, आचार्य राजहंस मैत्रेय, आर्य तपस्वी सुखदेव जी दिल्ली, आचार्य रवि शास्त्री तथा यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य विद्यादेव जी के ओजस्वी प्रेरणाप्रद प्रवचन होते रहे। आश्रम के ब्रह्मचारियों, प्रसिद्ध भजनोपदेशक धनीराम बेधड़क तथा माताओं द्वारा सुन्दर भजनो का कार्यक्रम भी चलता रहा, जिससे श्रद्धालु गद्गद् होते रहे।

युवा जागृति सम्मेलन- 28 सितम्बर सायं 4 बजे यज्ञोपरान्त सरदार भगत सिंह की जयन्ती पर युवा अमनदीप भारद्वाज सुपुत्र श्री मुकेश जी, एस.डी.ओ., सैक्टर-6, बहादुरगढ़ द्वारा आयोजित युवा जागृति सम्मेलन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ जिसमें बहादुरगढ़ से आये सैकड़ो युवाओं ने पं. जय नारायण भारद्वाज, पं. भगवत स्वरूप गौतम, श्री भगवान जी वेदान्त आश्रम, अमनदीप भारद्वाज, ब्र. ज्ञानेन्द्र आर्य, आचार्य विद्यादेव तथा आचार्य राजहंस मैत्रेय द्वारा क्रान्तिकारियो का स्मरण करते हुए दिये गये। प्रभावशाली, ओजस्वी, प्रेरणाप्रद विचारों का श्रवण किया। माता वेदवती एवं अन्य लोगों ने भजनों द्वारा सुन्दर विचार दिये। आगुन्तक युवाओं की ओर से अमनदीप द्वारा भोजन की सुन्दर व्यवस्था की गयी। सम्मेलन का संचालन श्री राजवीर जी आर्य ने युवाओं को प्रोत्साहित करते हुए सुन्दर ढंग से किया। अन्त में स्वामी धर्ममुनि जी ने सभी को अपनी शुभकामनाएं तथा आशीर्वाद प्रदान किया। कार्यक्रम की व्यवस्था विक्रमदेव शास्त्री द्वारा की गई।

आर्य महिला जागृति सम्मेलन-30 सितम्बर सायं 4 बजे विशाल आर्य महिला जागृति सम्मेलन श्रीमती वेदवती आर्या की अध्यक्षता में चला जिसकी मुख्य अतिथि श्रीमती शबनम जून धर्मपत्नी श्री राजेन्द्र श्री जून क्षेत्रीय विधायक बहादुरगढ़ रही। विशिष्ट अतिथि श्रीमती सोना आर्या श्रीमती शोभा महेन्द्रु, कमलेश गुलाटी, सुनीता शास्त्री, प्रियंका, निर्मला आर्या, सुमित्रा आर्या, विमल बुद्धिराजा, सुमन ठक्कर, श्रीमती लक्ष्मी देवी के सुन्दर भजनों का कार्यक्रम रखा। इस अवसर पर मुख्य अतिथि, श्रीमती शबनम जून, श्रीमती, सोना आर्या, एडवोकेट, राजवाला आर्या तथा अन्य द्वारा। महिला सशक्तिकरण आत्मरक्षा, भ्रूण हत्या, नारी उत्थान, एवं पतन जैसी समस्याओं पर प्रेरणादायक ओजस्वी विचार प्रस्तुत किए। अन्त में सम्मेलन की अध्यक्षा द्वारा भजन के माध्यम से सुन्दर विचार प्रस्तुत किये गये। कार्यक्रम की संयोजिका श्रीमती सुदेश कालड़ा पश्चिमी विहार ने कुशलतापूर्वक मंच का संचालन किया। स्वामी धर्ममुनि जी दुग्धाहारी ने सभी को शुभकामनाएं देते हुए आशीर्वाद दिया।

www.thearyasamaj.org

योग सम्मेलन- 1 अक्टूबर प्रात: 10 बजे, स्वामी जगदीशानन्द जी की अध्यक्षता में योग सम्मेलन चला जिसमें डॉ. दर्शन लाल जी आजाद ने अपनी कविताओं द्वारा कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। श्रीमती वेदवती आश्रम के प्रधान श्री सत्यानन्द जी आर्य, श्रीमती सुमन ठक्कर ने सुन्दर भजन प्रस्तुत किए। इस अवसर पर स्वामी रामानन्द जी, पं. खुशीराम आचार्य श्री सत्यपाल जी वत्स, आचार्य विद्यादेव, आचार्य रवि शास्त्री, वेदपाठी ब्रह्मचारियों एवं आचार्य राजहंस मैत्रेय द्वारा योगविषयक प्रभावशाली व्याख्यान हुए। अन्त में अध्यक्षीय व्याख्यान के बाद सम्मेलन सम्पन्न हो गया। सम्मेलन का संचालन, श्री राजवीर जी आर्य ने कुशलतापूर्वक किया। सम्मेलन की समाप्ति पर स्वामी धर्ममुनि जी द्वारा सभी का हार्दिक धन्यवाद एवं शुभाशीष प्रदान किया गया।

चरित्र निर्माण सम्मेलन- 1 अक्टूबर सायं 4 बजे से 7 बजे तक चरित्र निर्माण सम्मेलन आयोजित किया। सम्मेलन की अध्यक्षता श्री सुरेन्द्र कुमार बुद्धिराजा ने की। ब्र. उदयवीर, श्रीमती सुमित्रा आर्या, श्रीमती वेदव्रती एवं श्री भगवान वेदान्त आश्रम ने सुन्दर भजनो के द्वारा चरित्र निर्माण पर विशेष प्रकाश डाला। इसके बाद मा. आनन्द जी, श्री ब्रह्मजीत जी आर्य, स्वामी रामानन्द जी, स्वामी महेन्द्रानन्द जी, पं. खुशीराम जी, श्री राम किशन शास्त्री, अमनदीप भार द्वारा आचार्य राजहंस मैत्रेय और आचार्य विद्यादेव जी आदि विद्वानो के चरित्र निर्माण के विषय पर प्रभावशाली, ओजस्वी व्याख्यान हुए। श्री सुरेन्द्र कुमार जी बुद्धिराजा ने अपने भाषण में चरित्र सम्बन्धी अनेक बातों का दर्शाते हुए चरित्र निर्माण पर बल दिया। सम्मेलन का संचालन श्री राजवीर जी आर्य ने सभी को उत्साहित करते हुए किया। अन्त में स्वामी धर्ममुनि जी ने सभी का हार्दिक धन्यवाद किया और शान्ति पाठ के बाद सम्मेलन सम्पन्न हो गया।

आश्रम स्थापना दिवस समारोह- 2 अक्टूबर 2013 को प्रात: ध्यान साधना शिविर का समापन वक्तव्य आचार्य राजहंस मैत्रेय द्वारा साधकों को दिया गया तथा योगनिष्ठ सत्यपाल जी ने स्वास्थ्य सम्बन्धी चर्चाए रखी। ऋग्वेद पारायण यज्ञ के आचार्य विद्यादेव ने में पूर्णाहुति करायी तथा यजमानों को आशीर्वाद दिलाया। बाद शान्तिपाठ के बाद यज्ञ का समापन हो गया इसके बाद क्षेत्र के प्रसिद्ध सम्माननीय नेता श्री राजेश जी जून के करकमलों द्वारा ध्वजारोहण सम्पन्न हुआ, ब्रह्मचारियों द्वारा वैदिक ध्वजगान किया गया। तत्पश्चात आश्रम के ब्रह्मचारियों द्वारा भजनों के माध्यम से आश्रम स्थापना समारोह मा. सोमनाथ जी की अध्यक्षता में शुभारम्भ हुआ। इस अवसर पर श्री लक्ष्मण दास जी नरेला, पं. जयभगवान, झज्जर, पं. रमेश चन्द्र जी, श्रीमती खन्ना, श्रीमती वेदवती आदि ने सुन्दर भजनों का कार्यक्रम रखा। इस अवसर पर क्षेत्र के प्रसिद्ध नेता राजेश जी जून, श्री अशोक गुप्ता जी, चेयरमैन रवि खत्री, श्री सतीश छिक्कारा, जिला चेयरमैन जिला परिषद झज्जर, युवराज छिल्लर, पार्षद अन्य गणमान्य व्यक्ति पधारे। जिन्हें स्मृति चिन्हन देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर आचार्य खुशीराम, मां ब्रह्मजीत, स्वामी, रामानन्द स्वामी महेन्द्रानन्द, महात्मा लाल दास जी, कबीर आश्रम लाइन पर, बहादुरगढ़, रामफल एडवोकेट, श्री सत्यपाल जी वत्स, आचार्य राजहंस मैत्रेय, आचार्य विद्यादेव आदि विद्वानों के द्वारा प्रभावशाली व्याख्यान हुए। अन्त में स्वामी धर्ममुनि जी दुग्धाहारी ने सभी संन्यासियों, विद्वानों, दानियों, कार्यकर्त्ताओं एवं श्रोताओं का हार्दिक धन्यवाद किया। सभी वक्ताओं ने आश्रम में संचालित गतिविधियों की सराहना की। शान्ति पाठ के बाद सभी को स्वादिष्ट भोजन का आनन्द लेकर प्रस्थान किया। सभी कार्यक्रम की व्यवस्था विक्रम देव शास्त्री द्वारा सुन्दर ढंग से की गई।

स्व. आचार्य धर्मभानु जी की स्मृति में यज्ञ सम्पन्न

श्री मुनीश एडवोकेट खानपुरकलां गोहना ने अपने पूज्य दादा स्वर्गीय आचार्य धर्मभानु जी की स्मृति में प्रतिवर्ष की भांति इस बार भी गाँव में ही 21 सितम्बर को प्रात: 10 बजे आचार्य राजहंस जी मैत्रेय, बहादुरगढ़ के ब्रह्मत्व में यज्ञ का आयोजन किया। इस अवसर पर आचार्य श्री ने मानव जीवन में विद्या की आवश्यकता पर विशेष प्रकाश डाला। ब्र. जयपाल द्वारा सुन्दर भजन गाया गया। पं. जगन्नाथ वैद्य तथा अन्य विद्वानों ने स्वर्गीय धर्मभानु जी के सम्बन्ध में प्रकाश डाला। आचार्य जी ने यजमान परिवार को अपनी शुभकामनाएं प्रदान की। शान्ति प्रवचन, शान्तिपाठ के बाद भोजन प्रारम्भ हुआ।

www.thearyasamaj.org

वेद सन्देश

दम्पती का कर्तव्य

- डॉ. रामनाथ वेदालंकार

प्राचीं प्राचीं प्रदिशमारभेथाम्,
एतं लोकं श्रद्दधानाः सचन्ते।
यद् वां पक्वं परिविष्टमग्नौ,
तस्य गुप्तये दंपती संश्रयेथाम्॥

अथर्व 12.3.7

ऋषिः यमः। देवता स्वर्गः, ओदनः, अग्निः। छन्दः त्रिष्टुप।

(दंपती) हे पति-पत्नी। (तुम दोनो) **(प्राची प्राची प्रदिशं)** अगली-अगली प्रकृष्ट दिशा को **(आरभेथां)** ग्रहण करो। **(एतं लोकं)** इस गृहस्थ आश्रम को **(श्रद्-दधानाः)** श्रद्धावान् लोग (**सचन्ते**) प्राप्त करते हैं। **(वां)** तुम दोनों की **(यत्)** जो (वस्तु) **(अग्नौ)** अग्नि में **(परिविष्टं)** डाली जाकर (**पक्वं**) परिपक्व हो गई है। **(तस्य)** उसके **(गुप्तये)** रक्षण के लिए **(संश्रयेथाम्)** एक-दूसरे का आश्रय लो।

हे वर-वधू। तुम परस्पर विवाह सूत्र में परिणद्ध हुए हो। पर क्या तुम गृहस्थाश्रम का उत्तदरयित्व और कर्तव्य भी जानते हो? यह आश्रम श्रद्धावानों का आश्रम है, पति और पत्नी की आपस में एक-दूसरे के प्रति श्रद्धा और दोनों की मिलकर भगवान् में श्रद्धा जब होती है तब इस आश्रम का प्रसाद फलीभूत होता है। श्रद्धा में समर्पण का भाव जुड़ा हुआ है। पति-पत्नी एक-दूसरे को आत्म-समर्पण करते हैं और दोनों मिलकर परम प्रभु को आत्म-समर्पण करते हैं। श्रद्धा और समर्पण कितने पवित्र शब्द हैं। गृहस्थ दम्पती यदि इन शब्दों का मर्म समझकर आचरण करें, तो उनका गृहस्थाश्रम सौरभ बखेरने लगता है।

हे दम्पती! तुम दोनों आगे-आगे की प्रकृष्ट दिशा की ओर बढ़ते चले जाओ। तुम ब्रह्मचर्याश्रम की साधना कर चुके हो। इस बात को मत भूलो कि यह गृहस्थाश्रम भी साधना का ही आश्रम है। साधना करनेवाले ही आगे बढ़ते हैं और वस्तुतः आगे पग बढ़ाना भी एक साधना ही है। निरूदेश्य विलासमय गृहस्थ जीवन साधना-हीनों का होता है। यदि तुम गृहाश्रम में विलास और साधना को एकाकार कर सकोगे, तो निश्चय ही तुम्हारा गृहाश्रम विकास का सोपान बन सकेगा।

गृहस्थाश्रम में पति-पत्नी अग्नि प्रज्वलित करते हैं, आहिताग्नि बनते हैं अपना सब-कुछ उन्हें उस अग्नि में परिपक्व करना होता है। अपना तन, अपना मन, अपना धन, अपना आत्मा, अपने कार्य, सबको परिपक्व करना होता है। जो परिपक्व हो गया है, उसकी सुरक्षा करनी है और जो परिपक्व नहीं हुआ है उसे परिपक्व करने में तीव्रता से तत्पर होना है। यह परिपक्वता ही गृहस्थाश्रम की देन है। पर यह पपिक्वता भी अकेले-अकेले नहीं होती, पति-पत्नी मिलकर ही परिपक्वता सम्पादित करते हैं और मिलकर ही परिपक्व की रक्षा करने में समर्थ होते हैं।

हे गृहस्थ-जनो! स्मरण रखो, गृहस्थाश्रम श्रद्धा का, आगे-आगे बढ़ने का और परिपक्व होने का आश्रम है। अतः इस आश्रम की नींव में और इस आश्रम पर बने भवन में इन तीनों को सदा सिंचित करते रहो। तुम्हारा मंगल होगा।

श्री चन्द्रभान चौधरी (पूर्व डी.सी.पी.) द्वारा एकत्रित दान राशि

गंधार कला जी, पश्चिम विहार, दिल्ली	500/-
प्रकाश लता जी विकासपुरी, नई दिल्ली	150/-
श्रीमती सुभाषनी आर्या जी पश्चिम विहार नई दिल्ली-63	250/-
श्री सन्तोष भटेजा, लाजपत नगर, दिल्ली	250/-
श्रीमती प्रवीण मेहन्दीरत्ता, विकासपुरी, दिल्ली	150/-
सेठी परिवार, विकासपुरी, दिल्ली	100/-
श्री एच.पी. खण्डेवाल विकासपुरी, दिल्ली	100/-
गुलशन लाल, पश्चिम विहार, दिल्ली	50/-

www.thearyasamaj.org

सम्पादकीय

आत्म उन्नत्ति का मार्ग

प्राय: मानव अविवेक पूर्ण जीवन जीता है जिसके कारण उसका जीवन सुखद होने के अतिरिक्त उलझता हुआ और अशान्त अधिक दिखाई देता है हमारे सम्पूर्ण जीवन व्यवहार में विवेक का अनिवार्य और महत्वपूर्ण स्थान है। जिसके बिना सुखी और शान्त जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। विवेक का अर्थ है जिससे विवेचन किया जाता है, जिससे सत्य जाना जाता है। यदि सत्य जानने की क्षमता व्यक्ति के पास न्यून है तो वह सुनिश्चित ही जीवन को दुखद अनुभव करेगा। विवेकपूर्ण स्थिति में हम जीवन के सम्पूर्ण लोक व्यवहार एवं घटित होने वाली सभी घटनाओं को सुखद तथा सौन्दर्य पूर्ण ढंग से देख पाते हैं अन्यथा तो सब भयावह हो जाता है। हमारा जीवन विवेक पूर्ण सुखद उत्साहित एवं मंगलमय हो सके, इसके लिए निम्न लिखित कुछ बातें समझने योग्य हैं। प्रथम है **स्वतन्त्र दृष्टि**– हमारी जितनी विवेक पूर्ण स्थिति है उससे अधिक उच्चतर होने के लिए सबसे पहले आवश्यक बिन्दु है स्वतन्त्र दृष्टि या खुली दृष्टि का होना– खुली दृष्टि होने का अर्थ है सांसारिक घटनाओं और तथ्यों को स्वतन्त्र रूप से देखने की क्षमता। इस दृष्टि के द्वारा व्यक्ति अपने चारों ओर से घटित होने वाली घटनाओं से बहुत कुछ सीखता हुआ आगे बढ जाता है। जिसकी दृष्टि स्वतन्त्र नहीं है वह कुछ भी जो उसके अनुकूल नहीं है उस घटना या व्यक्ति के विरोधभाव में खड़ा होकर बंध जाता है जैसे चार व्यक्ति जिनमें से कोई चोरी करता है, तो कोई झूठ बोलता है, तो कोई छल करता है, तो कोई धोखा देता है। अविवेकी व्यक्ति इन चारों से ही विरोध कर अपने अन्त: करण में ईर्ष्या द्वेष भाव को जन्म दे देता है। इस प्रकार इन चारो लोगों के व्यवहार के कारण वह स्वयं को चार खूंटों से बांधकर वहीं खड़ा हो जाता है और उसके आगे का विकास रूक जाता है। वह व्यक्ति उन लोगों की निन्दा में ही संलग्न रहता है और वह उन लोगो के दूसरे पहलू जो अच्छे हैं उनकी अनदेखी कर स्वयं को उनसे अच्छा सिद्ध करने की कोशिश करता रहता है जो स्वयं ही एक अनजाने में अवगुण को जन्म देकर उसे ही पोषित करता रहता है। स्वतन्त्र दृष्टि वाला वह सबका निरीक्षण करता हुआ किसी से न बंध कर आगे बढता हुआ चला जाता है संकुचित दृष्टि वाले किसी भी बात को लेकर वहीं निन्दा चुगली करते हुए अपने विकास को रोक लेता है इसलिए हम अपनी सदैव खुली दृष्टि बनाए रखें। **दूसरी बात है स्वार्थ से ऊपर उठना**– स्वार्थ का अर्थ है स्व के लिए अर्थात् आत्म बोध के लिए, जो कुछ किया जाता है वह स्वार्थ है। यह स्वार्थ का सार्थक अर्थ है। स्वार्थ का एक दूसरा अर्थ भी होता जो समाज में प्राय: निम्न अर्थ में लिया जाता है। अहंकार के तृप्ति के लिए जो कुछ किया जाता है वह भी स्वार्थ है। परन्तु ऐसे निम्न स्वार्थ के लिए जो कुछ किया जाता है वह कष्टकारक ही होता है। इसलिए व्यक्ति को निकृष्ट स्वार्थ से बचकर आत्म बोध कराने वाले स्वार्थ का सहारा लेना चाहिए। हमारे कर्म अहंकार के पोषण से उठकर अस्तित्व के सृजनात्मक कार्य के पोषक बनें इसका पूरा विवेक होना चाहिए। सभी शास्त्रों में अहंकार को पिघलाने के लिए सेवा सहयोग तथा अन्य सभी क्रियाओं को ईश्वर को समर्पित करते हुए जीवन जीने की सदप्रेरणा दी गयी है। इस प्रकार स्वार्थ से छुटकारा पाने के लिए अनेक प्रकार विधियां दी गयी हैं जिनके द्वारा व्यक्ति अपना उद्धार कर सकता है। व्यक्ति को कुछ ऐसे कर्म करने चाहिए जिसका फल सीधा स्वयं को न मिलकर समाज को मिले। तभी कहा जा सकता है कि यह व्यक्ति स्वार्थ से ऊपर उठ गया है। यह एक कसौटी है। हम सदैव अपनी मांग रखते हैं। और उसे पूरा करने के लिए अज्ञात शक्तियों से प्रार्थना कर आशा लगाते है कि वे हमारी कामनाओं का पूरा करेगें। इस प्रकार पूरा जीवन निम्न स्वार्थ को पूरा करने में ही निकल जाता है। **तीसरी बात है संवेदन शीलता** – संवेदन शीलता के बिना जीवन को उदार और आनन्द पूर्ण नहीं बनाया जा सकता। जब हम दूसरों को अपना मानने लगते हैं और उनके दुख दर्द में भी समानभूति का अनुभव करते हैं। तो फिर संवेदनशीलता की सीमा बढ जाती है। संवेदनशीलता में व्यक्ति अपने स्वार्थ से ऊपर उठकर सबके प्रति अपनी सहानुभूति प्रकट करता है। अपने लोगों के प्रति तो सभी सहानुभूति सभी प्रकट करतें है परन्तु जो अपने नहीं हैं उनके प्रति सहानुभूति प्रकट करना और बड़ी बात है जब हमारे अन्त:करण में **सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया:। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दु:खभाग्य भवेत्।** सभी सुखी हों, सभी निरोग हों, सभी परस्पर भद्रभाव से देखे, कोई दुखी न हो की भावना से जीवन यापन होने लगता है तो संवेदनशीलता की व्यापकता का प्रभाव पड़ने लग जाता है। और हमारे अन्दर अनेक प्रकार की संकीर्णता जो व्यक्ति को कुंठित बनाती है का क्षय होने लगता है। और हम आत्मीय भाव जीने लग जाते हैं।

–राजहंस मैत्रेय

www.thearyasamaj.org

बौद्धों के क्षणिकवाद का खण्डन

- राजहंस मैत्रेय जी, आचार्य आत्मशुद्धि आश्रम

पूर्व अंक में बौद्ध मत के प्रति विचार हुआ। अभी वही क्रम संचालित है। पिछले सूत्र में उपकार्य उपकारक भाव अदृष्ट का कर्त्ता और भोक्ता बौद्धमत में एक समय में नहीं हो सकते। इसलिए अदृष्ट की व्यवस्था नही हो सकती। अब पुनः उपर्यक्त अर्थ में शंका की जाती है कि-

पुत्रकर्मवदितिचेत् ॥32॥

पदार्थ- पुत्रकर्मवत्= जैसे पुत्र प्राप्ति के लिए पिता द्वारा गर्भाधान कर्म के समान एक का दूसरे को फल की संभावना होती है। **इति**= ऐसा **चेत्**= यदि मान लिया जाए तो अर्थात् पिता पुत्र के लिए गर्भाधान करता है जिसमें पिता के कर्म का फल पुत्र को होता है यदि ऐसा मान लिया जाए तो अदृष्ट द्वारा बंध हो सकता है। इसी का उत्तर इस सूत्र द्वारा दिया जाता है।

न अस्ति हि तत्र स्थिर एकात्मनो गर्भाधानादिना संस्क्रियते ॥33॥

पदार्थ- न=यह ठीक नही क्योंकि **तत्र**=उस स्थिति में **यः**=जिस जीवात्मा का **गर्भाधानादिना**=गर्भाधानादि कर्म द्वारा **संस्क्रियते**=संस्कार किया जाता है। **स्थिर**=वह स्थिर **एकात्मा**= एक ही आत्मा **हि**=ही **अस्ति**=है अर्थात पिता द्वारा पुत्र के लिए किया गया गर्भाधान संस्कार के समान नहीं क्योंकि जिनके मत में आत्मा स्थिर नहीं। जिनके मत में आत्मा स्थिर है, उनके लिए पिता द्वारा गर्भाधान संस्कार रूप अनुष्ठान पुत्र प्राप्ति में संस्कार युक्त किया जाता है क्योंकि करने वाला और जिसके लिए किया जाता है। वे दोनों एक काल में समान रूप से स्थिर हैं। उपकार्य उपकारक भाव बन जाता है लेकिन जिनके मत में अदृष्ट का आश्रय विज्ञान और वासना का आश्रय विज्ञान दोनों ही अलग अलग हैं। और वे क्षणिक हैं। इसलिए एक अदृष्ट से दूसरे का विषय वासना का सम्बन्ध नहीं हो सकता और सम्बन्ध न बनने से बन्ध की व्यवस्था भी नहीं बन सकती।

अब बौद्धवादी आत्मा एव अन्य सभी पदार्थों को क्षणिक बताता है।

स्थिर कार्यासिद्धेः क्षणिकत्वम्॥34॥

पदार्थ-स्थिरकार्यासिद्धेः=स्थिर कार्य असिद्ध होने से **क्षणिकत्वम्**=सब क्षणिक है अर्थात् जो स्थिर कार्य दीखते हैं वे सभी क्षण क्षण बदलते रहते हैं। स्थिरता कहीं सिद्ध नहीं होती। इसलिए आत्मा परमात्मा घट पट सब दृश्य जगत् क्षणिक है। बौद्धों के मत में कुछ भी स्थिर नही है सब क्षणिक है।

अब इसका समाधान किया जाता है।

न प्रत्यभिज्ञाबाधात्॥35॥

पदार्थ-**न**= नहीं **प्रत्यभिज्ञाबाधात्**=प्रत्यभिज्ञा से इसका निराकरण हो जाता है। अर्थात सब क्षणिक है यह ठीक नही क्योंकि लोक में प्रत्यभिज्ञा [पुनः पहचान] से इसका समाधान हो जाता है।

हम सभी वस्तुओं को परिवर्तन शील देखते हैं। फिर भी वे पूरी नही बदल जाती। आज जिस रमेश नामक व्यक्ति को हम देखते हैं। पचास वर्ष बाद भी हम उसी रमेश को पहचान लेते हैं यद्यपि उसके शरीर में बहुत कुछ बदल जाता है फिर भी वह वही रमेश होता है, जिसे पचास साल पहले देखा अनुभव किया था। वस्तु की पुनः पहचान को ही प्रत्यभिज्ञा कहते हैं। संसार में सैकड़ों वस्तुओं को, लोगों को, सैकड़ों वर्षों के बाद भी पहचान लिया जाता है इससे सिद्ध होता है कि संसार क्षणिक नहीं है। यद्यपि परिवर्तनशील है फिर भी उसमें स्थिरता है जिसे पुनः पहचान लिया जाता है। इससे सिद्ध होता है कि संसार परिवर्तनशील होता हुआ भी अपने मूल कारण में स्थिर रहता है। सब क्षणिक है इसका लोक में यथार्थ दृष्टि या प्रत्यभिज्ञा द्वारा बाध हो जाता है यदि सब पदार्थ क्षणिक होते तो प्रत्यभिज्ञा कभी नही होती।

सब कुछ क्षणिक है इसमें दूसरा दोष दिखाई देता है।

श्रुति न्याय विरोधात्॥36॥

पदार्थ-**च**= और **श्रुतिन्यायविरोधात्**= श्रुति और न्याय का क्षणिक मानने में दूसरा विरोध आता है अर्थात् वेद तथा अन्य न्याय सम्बन्धी शास्त्रों से सब कुछ क्षणिक है इसके मानने में विरोध आता है। पहले तो प्रत्यभिज्ञा [पुनः बोध] द्वारा क्षणिकत्व का खण्डन हो जाता है दूसरे वेदोक्त उपनिषदादि शास्त्रों में इसका स्पष्ट विरोध है जैसे **सदेव सोम्यदेमग्र आसीत्** छा.6/2/11 हे सोम्य यह सम्पूर्ण जगत उत्पत्ति से पूर्व सत् था **कथमसतः संजायते** छा. 6/2/2 असत से सत् की उत्पत्ति नही होती इस तरह शास्त्रों

www.thearyasamaj.org

का विरोध भी आता है। सत् का अर्थ है जो भूत वर्तमान और भविष्य में भी अपने मौलिक रूप में रहेगा। अर्थात् सत् असत् नहीं होता **नासतो विद्यते भावो न भावो विद्यते सतः**। गीता अर्थात् असत् का कभी भाव नहीं होता और भाव का कभी अभाव नही होता इस प्रकार शास्त्र का विरोध होने से भी जगत के सम्पूर्ण पदार्थो को क्षणिक नही माना जा सकता।

अब क्षणिकवाद दीपशिखा के सिद्धान्त से भी असिद्ध है।

दृष्टान्तासिद्धेश्च ॥ 37 ॥

पदार्थ- **च**=और **दृष्टान्तसिद्धेः**=दीपशिखा के दृष्टान्त मे क्षणिक वाद की सिद्धी नहीं अर्थात् दीपशिखा के दृष्टान्त से क्षणिक वाद सिद्ध नहीं किया जा सकता क्योंकि बौद्धों द्वारा जलते हुए दीपक का जो दृष्टान्त दिया जाता है उसमें भी जो क्षण क्षण परिवर्तन है वह भी क्षणिक नहीं हैं उसमें भी जलते हुए कण नष्ट नही हो जाते अपितु ठंडे होकर आकाश में स्थिर होते है जैसे दीपक की जलती हुई लौ के कण प्रतिक्षण जलते हुए बहते रहतें हैं और देखने में वे सब स्थिर लगते हैं वेसे ही सब कुछ क्षाणिक है इस दृष्टान्त से भी क्षणिक वाद सिद्ध नहीं होता अपितु स्थिरता ही सिद्ध होती है लौ का बहाव सूक्ष्म होने से क्षणिक होने का भ्रम होता जो वास्तविक नहीं।

क्षणिकवाद में कार्यकारण भाव भी नही पाया जाता। इस दोष को यहां दिखाया जाता है।

युगपज्जायमानयोर्नकार्यकारणभावः ।।38।।

पदार्थ- युगपत जायमानयोः=एक समय में होने वाले दो पदार्थो का **कार्यकारणभावः**= कार्यकारणभाव **न**= नही होता अर्थात् एक समय में होनेवाले दो पदार्थो का कार्यकारण भाव नही होता। बौद्ध सभी वस्तुओं को अपनी धारा में दीपशिखा के समान पूर्व पूर्व क्षण का बाद बाद वाले क्षण के साथ कार्य कारण भाव मानते हैं वे सब एक समय में उत्पन्न न होने से उनका पूर्व और वाद वाला कार्य कारण भाव नहीं बनता जहां कार्य कारण भाव होता है वह एक पूर्व और दूसरा बाद वाला भाव बनता है जैसे गाय के दोनो सींग एक साथ निकलते हैं। उनमें यह पहले हुआ और यह बाद में हुआ ऐसा नही होता है। पूर्व और बाद वाला भाव न होने से कार्य कारण का भी अभाव ही पाया जाता है। इस तरह क्षणिक वाद में भी कारण कार्य का भी अभाव पाया जाता है यदि क्रम से होने वाले पदार्थो का कार्य कारण भाव माने तो भी ठीक नहीं है।

पूर्वापाये उत्तरयोगात्।।39।।

पदार्थ-पूर्वा पाये=पूर्व क्षण के नष्ट हो जाने पर **उत्तरयोगात्**=बाद वाले क्षण की उत्पत्ति नही होती अर्थात् पूर्व क्षण के नष्ट हो जाने पर बाद वाले क्षण की उत्पत्ति नहीं हो सकती है। हम जानते है कि कारण अपने कार्य में भी पाया जाता है। जैसे मिट्टी कारण है घड़े का, वह कार्य रूप घड़े में भी रहती है। कारण रूप मिट्टी पूर्व क्षण में रहती है फिर वह बाद वाले क्षण में कार्य रूप घड़े मे भी पायी जाती है जबकि क्षणिक वाद की मान्यता है वस्तु केवल क्षण रूप में ही रहती है दूसरे क्षण वह नष्ट हो जाती है परन्तु घड़े के दृष्टान्त में स्पष्ट है कि मिट्टी कारण है जो पूर्व क्षण है और फिर वह घड़े रूप में परिवर्तित हो जाती है जबकि क्षणिक वाद में वस्तु मात्र एक ही क्षण रहती है। दूसरें क्षण में वह नष्ट हो जाती है पूर्व क्षण का उत्तर क्षण का कारण माना जाये तो यह असंभव है क्योकि वस्तु मात्र का स्थायित्व केवल क्षणिक होता है उत्तर क्षण में वह नहीं हो सकती इसलिए क्रम से होने वाले कारण का कार्य से कोई सम्बन्ध नहीं यदि है तो क्षणिक वाद नहीं हो सकता।

उपर्युक्त पक्ष में और दूसरा दोष दिखाते हैं।

तदभावे तदयोगादुभयव्यभिचारादपि न॥ 40 ॥

पदार्थ - **तदभावे**= कार्य और कारण के उपस्थित होने पर **तदयोगात्**= कारण और कार्य के उपस्थित न होने पर उभय **व्यभिचारात्**=अन्वय व्यतिरेक की व्यवस्था न पाये जाने से **अपि** =भी **न** = क्रम न होने से कार्य कारण भाव नहीं हो सकता । अर्थात् कार्य और कारण के उपस्थिति में कारण और कार्य के अविद्यमान होने पर अन्वय व्यतिरेक की व्यवस्था न पाऐ जाने पर भी कार्य कारण भाव नहीं हो सकता। प्रायः देखा जाता है कि प्रत्येक वस्तु क्षणिक होने से जिस क्षण में कारण वस्तु की विद्यमानता होने से उसे में कार्य वस्तु अनुपस्थित होती है और जब कार्य वस्तु प्रकट होती है उस क्षण कारण वस्तु की उपस्थिति नहीं होती इस प्रकार इन दोनों का सम्बन्ध न होने की अवस्था में इनका अन्वय व्यतिरेक स्थापित नहीं होता। जहां कार्य कारण भाव का सम्बन्ध नहीं बनता कारण के होनेपर कार्य का होना अन्वय और कारण के न होने परकार्य का न होना व्यतिरेक कहलाता है क्षणिक वाद में इन दोनों का सम्बन्ध न होने से यह वाद असंगत है क्योकि यह कारण के न होने पर कार्य का रहना माना जाता है। और कारण के न रहने पर कार्य नहीं होता।

www.thearyasamaj.org

मन और मनोनिग्रह

- शोधार्थी संजय कुमार

मन एक महत्वपूर्ण शब्द है। आज के युग में हम प्राय: मन की चर्चा करते हें, परन्तु मन के बारे में बहुत कम ही जानते हैं। जब तक मन के बारे में नहीं जाना जाता तो हम मानसिक स्वास्थ्य की कल्पना कैसे कर सकते हैं। मानसिक स्वास्थ्य पर ही हमारा शारीरिक स्वास्थ्य निर्भर करता है।

मन एक बहुत शक्तिशाली और वेगवान है। संसार में इससे शक्तिशाली कुछ नहीं है। संसार में कोई कार्य ऐसा नहीं है जो मन के बिना हो सकता है। जितने भी कार्य होते हैं, उनकी ऊपज पहले मन में ही होती है। अगर कोई कार्य पूरे मनोवेग से किया जाता है तो उसकी सफलता में कोई संदेह नहीं रहता।

हमारे मन में अनेक प्रकार की शक्तियों का भण्डार है और इन्हीं मन की शक्तियों का नियमन ही योग है। अगर कोई व्यक्ति अपने मन का नियमन या निग्रह कर लेता है तो वह संसार में एक सुखी जीवन जीता हुआ अपने जीवन के सभी लक्ष्यों को प्राप्त कर सकता है। इस मन का निग्रह कैसे हो इससे पहले हम मन को समझने का प्रयास करते हैं।

मनोनिरूपण

आयुर्वेद के शास्त्र चरक संहिता में मन को इस प्रकार से समझाया गया है- खादीन्यात्मा मन: कालो दिशश्च द्रव्य संग्रह। (च.सू.)

अर्थात्-पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, काल आत्मा, मन और दिशा यह नौ द्रव्य हैं।

इस प्रकार मन को एक द्रव्य माना गया है। मन चौबीस तत्वों वाले पुरुष का एक प्रधान तत्व है। मन का कार्य है मनन करना।

मन की निक्ति: 'मन-ज्ञाने' धातु से मन बना है। 'मन-बोधे' धातु से भी मन बना है। 'मन्यते बुध्यतेऽनेनेति मन:। अर्थात जो हमें विषयों का बोध कराता है, वही मन है। मन्यते ज्ञायतेऽनेनेति मन:।' अर्थात मन वह है जो ज्ञान कराता है।

अत: यह स्पष्ट हो जाता है कि मन विषयों के ज्ञान का कारण है। मन की सहायता से ही हमें ज्ञान होता है। आगे आयुर्वेद में मन के पर्याय के बारे में इस प्रकार समझाया गया है: **चित्त्तम तु चेतो हृदयं स्वान्त: मानसं मन:। चित्त, चेत, हृदय स्वान्त मानस तथा मन यह पर्याय हैं। अतिन्द्रियं पुनर्मन: सत्वसज्ञकंचेत इत्याहुरेकै।** च.सू.। यह मन अतिन्द्रिय है। सत्व तथा चेत इसकी संज्ञाऐ हैं।

मन के लक्षण

लक्षणं मनसो ज्ञानस्याभावो भाव एवं च।
सति हि आत्मेघात्मोन्द्रिर्यार्थानाम् सन्निकर्षेन वर्तते॥
वैवृत्यान्मनसो ज्ञानम् सान्निधात्तच्य वर्तते।

अर्थात-एक साथ ज्ञान का भाव व अभाव मन का लक्षण हैं आत्मा, इन्द्रिय व विषयों का संयोग होने पर भी यदि मन का संयाग न हो तो ज्ञान नहीं होता। मन का संयोग होने पर ही ज्ञान होता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि ज्ञान के लिए मन का संयोग होना आवश्यक है।

मन का स्वरूप

सत्व संज्ञक मन:। अश्वकोष

अर्थात-यह मन सत्व संज्ञा वाला है। इसको सत्व गुण से ही पैदा होने के कारण मन को 'सत्व' नाम से भी पुकारा जाता है। मन की उत्पत्ति सात्विक अहंकार द्वारा राजसिक अहंकार के सहयोग से होती है। यह राजसिक अहंकार ही क्रियाशीलता का कारण है। मनुष्य का मन मूलभूत रूप से सात्विक स्वभाव का है अर्थात् प्रभास्वर है। यह विकार-रहित है। इसमें पाये जाने वाले विकार उससे उसी प्रकार भिन्न है, जिस प्रकार कोहरा, बादल, अंधकार आदि आकाश से भिन्न हैं। फिर मन दोषयुक्त क्यों होता है? इसके उत्तर में कहा गया है कि यह अविद्या के प्रभाव से दोषयुक्त होता है।

मन के विषय

आयुर्वेद में चरक संहिता के शरीरस्थानम् में मन के विषय इस प्रकार से कहे गए हैं:

चिन्त्यं विचार्यमूहा च ध्येयं संकल्प्यमेव च।
यत्किच्चिन्मनसी ज्ञेयं तत् सर्व हार्थसंज्ञकम्॥ चू. सू.

अर्थात् चित्य (चिन्तन करने योग्य) विचार्य, ऊहा (वितर्क), ध्येय, संकल्प, इसके अतिरिक्त और

www.thearyasamaj.org

भी जो मन द्वारा जानने योग्य विषय है, वे सब मन के विषय है।

मन के कर्म

इन्द्रियानिग्रहः कर्म मनसः स्वस्थ निग्रहः।
ऊह्य विचारश्च ततः परं बुद्धिः प्रवर्तते॥ चं सं श. सं.

अर्थात- इन्द्रिय का अभिग्रहण, स्वयं अपना (उस विषय के ज्ञान के लिए) निग्रह करना, ऊह और विचार ये मन के कर्म हैं।

यहाँ इन्द्रियानिग्रह का तात्पर्य यह है कि जिस काल में जिस इन्द्रिय विशेष के व्यापार की इच्छा पुरुष को होती है, उस काल में मन उस इन्द्रिय का अभिग्रह (अभितः=चारो ओर से, ग्रह=ग्रहण) करता हैं, जिससे इन्द्रियजनित विषय का भली-भांति ज्ञान हो सके। अब आगे बताया गया है कि ज्ञान का क्रम कैसे होता है।

इन्द्रियेणेन्द्रियार्थो हि समनस्केन गृह्यते।
कल्पयते मनसद्रय्ध्र्वम् गुणतादोषतो यथा॥
जायते विषयेतज सा बुद्धिः विनिश्चयात्मिका।
व्यवस्याति यथा वक्तुम कर्तुम वा बुद्धिपूर्वकम्॥

अर्थात्- मन से युक्त इन्द्रिया अपने विषयों का ग्रहण करती हैं। इसे ही निर्विकल्पक ज्ञान कहा गया है। उसके बाद मन उसके गुण तथा दोष की कल्पना करता है। तदन्तर उस विषय में निश्चयात्मक बुद्धि पैदा होती है और पुरुष बुद्धिपूर्वक कहने या करने का निश्चय करता है।

आत्मा मन से, मन का इन्द्रिय से, इन्द्रिय का विषय से सम्बन्ध होने से ही हृदयस्थ आत्मा को विषय का ज्ञान होता है। मन, बुद्धि, अहंकार तीनो ही आत्मा को विषय का ज्ञान कराते हैं। अतः यह तीनों ही अन्तकरण हैं मन का व्यापार संकल्प, अहंकार का व्यापार अभिमान तथा बुद्धि का व्यापार अध्यवसाय है। इन्द्रियां ज्ञान के बाह्यकरण है। उनका कार्य विषय को ग्रहण करना है।

मन के भेद

चरक संहिता में मन के तीन प्रकार के भेद बताए गए हैं-

त्रिविधम् खलु, सत्वम् शुद्ध राजस तामसमिति। च.शा.

मन तीन प्रकार का है-शुद्ध सात्विक, राजस और तामस।

चरक संहिता का कथन है कि सात्विक मन कल्याण अंश से युक्त होने के कारण दोषरहित होता है। राजसिक मन रोष के अंश से युक्त होने के कारण तथा तामसिक मन मोह के अंश से युक्त होने के कारण दोशयुकत होता है।

मानसिक दोष और मनोनिग्रह

मन का ज्ञान होने पर हंम मानसिक दोषों को समझ सकते हैं और यदि मन पर नियंत्रण करने की कला हमें आती है तो मानसिक दोष उत्पन्न ही नहीं होते। हम जानते हैं कि मन प्रकृति के समान ही त्रिगुणात्मक होता है। प्राकृत अवस्था में इसमें सत्व गुण की ही विशेषता रहती है। अतः इसका दूसरा सत्व भी है। रज और तम मन के दो दोष हैं- राजस्तमश्च मनसो द्वौ च दोषादुहाह्तौ। च.सू.।

अर्थात्- इन दो दोषों के प्रबल होने पर ही मानसिक व्याधियों की उत्पति होती है। मन के दोनों दोषों को दूर करने के लिए विभिन्न उपाय शास्त्रों में बताए गये हैं, वे इस प्रकार से हैं:-

भोजन द्वारा मानसिक स्वास्थ्य

भोजन को आयुर्वेद में मानसिक स्वास्थ्य से जोड़ा गया है। गीता में भी भोजन को मानसिक स्वास्थ्य से जोड़कर देखा गया है। भोजन की प्रकृति भी तीन प्रकार की होती है-सात्विक, राजसिक व तामसिक। मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए शुद्ध और सात्विक भोजन आवश्यक है। राजसिक (मिर्च, मसाले, खटाई, माँस, मछली आदि) व तामसिक भोजन (बासी भोजन, शराब व दुर्गन्ध वाला भोजन) मानसिक स्वास्थ्य को खराब करता है।

प्राणायाम द्वारा मन का नियमन

नियन्ता प्रणेता च मनसः 1 च स्

आयुर्वेद के अनुसार वायु मन का नियन्त्रण व प्रेरणा करने वाला है।

हठ योग के अनुसार

इन्द्रियाणां मनोनाथः मनोनाथस्तु मारूतः। इन्द्रियों का स्वामी मन है तथा मन का स्वामी वायु है। यहां वायु लेना चाहिए, इस वायु का नियंत्रण प्राणयाम से होता है। इसलिए मन के नियमन के लिए प्राणायाम करना चाहिए।

मन का नियन्त्रण अभ्यास और वैराग्य द्वारा

श्रीमदभगवद्गीता में अभ्यास और वैराग्य द्वारा मन

www.thearyasamaj.org

को नियन्त्रण करने का साधन इस प्रकार बताया गया है-

असंशयम् महाबाहो मनो दुर्निग्रहम् चलम्।
अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते॥

भगवान श्री कृष्ण कहते हैं कि हे महाबाहों इस मन का निग्रह करना निश्चित रूप से बड़ा कठिन है क्योंकि यह चलायमान है। इस मन का नियन्त्रण अभ्यास और वैराग्य से करना चाहिए।

मन का नियन्त्रण ध्यान द्वारा

योगवशिष्ठ में ध्यान को मन का नियन्त्रण करने का सबसे अच्छा उपाय बताय गया है। मन ध्यान द्वारा अपनी मनन शक्ति खो देता है और शान्त हो जाता है।

मन का नियन्त्रण मन द्वारा

मन का नियन्त्रण मन के द्वारा किस प्रकार किया जाता है, इसको योग वशिष्ठ में इस प्रकार कहा गया है:

मन एवं समर्थो हि मनसो दृढ़ निग्रहे।
अराजा किम् समर्थः स्यादाज्ञो निग्रह॥

अर्थात् मन का दृढ़ निग्रह करने में मन ही समर्थ होता है क्योंकि जो राजा नहीं है वह क्या किसी राजा का निग्रह कर सकता है।

इससे यह निश्चय होता है कि मन का दृढ़ निश्चय ही मन का निग्रह करने में समर्थ है, जो मन को जीतना चाहता है पर उसके लिए प्रबल प्रयत्न नहीं करता, वह कभी भी मन को नहीं जीत सकता।

मन का नियन्त्रण विवेक द्वारा

मन को जीतने के लिए प्रबल पुरुषार्थ की आवश्यकता होती है। इसके लिए मन में ज्ञान का उद्‌य होना आवश्यक है। इसलिए ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रयास करने चाहिए। जब संसार की असारता का ज्ञान हो जायेगा, अहं भाव नष्ट हो जायेगा और जब मनुष्य में उत्पन्न हुआ विवेक सब वासनाओं का क्षय कर देगा। इन वासनाओं के नाश से ही मन स्वयं ही स्थिर हो जायेगा।

अतः हम देखते हैं कि मन पर नियन्त्रण करना मानसिक स्वास्थ्य व शारीरिक स्वास्थ्य की दृष्टि से परम आवश्यक है। जब हम मानसिक रूप से स्वस्थ रहते हैं तो उस अवस्था में हमारे मन में अच्छे संकल्प आते हैं और समाज उन्नत होता है। सकारात्मक विचार स्वस्थ मन में ही आ सकते हैं। सकारात्मक विचारों के लिए मन को समझना व उसका नियन्त्रण करना आवश्यक है।

संदर्भ ग्रंथः (1) चरक संहिता-डॉ. ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, चौखम्भा सुभारती प्रकाशन वाराणसी। (2) मनोविज्ञान तथा शिवसंकल्प-स्वामी आत्मानन्द सरस्वती-हरियाणा साहित्य प्रकाशन झज्जर (हरियाणा)। (3)माधवनिदानम्-आयुर्वेदाचार्य श्रीरघुनन्दनोपाध्याय-चौखम्भा संस्कृत संस्थान वाराणसी। (4) शरीर विज्ञान व योगाभ्यास-डॉ. एन.पी.एस. वर्मा-राजकीय आयुर्वेदिक महाविद्यालय गुरुकुल कांगड़ी।

- मार्गदर्शक डॉ. रामाकान्त मिश्रा,
एम.जे.आर.पी. यूनि., जयपुर

देशद्रोही कौन?

देवराज आर्य मित्र, हरिनगर

देश द्रोही वह है-

1. जो आवश्यकता से अधिक संग्रह करके गरीब जनता को भूखा मरने पर विवश करता है।
2. नियमों/कानूनों का उल्लंघन करके अनुशासन भंग करता है, जैसे-जहां धूमपान निषेध है, वहां बीड़ी-सिगरेट पीता है, वायुमंडल दूषित करता है।
3. जो ईमानदारी से अपने कर्तव्य का पालन नहीं करता, रिश्वतखोर है, बिना परिश्रम के मुफ्त की खाता है।
4. अपने अनुचित मांग पूरी कराने के लिए राष्ट्र की सम्पत्ति और जान-माल को हानि पहुंचाता है।
5. जो चोरी करता है, डाके डालता है, अपहरण और बलात्कार जैसे कुकर्म करके समाज व देश को कलंक लगता है।
6. गलत झूठी अफवाह फैलाकर जनता को गुमराह करता है। अंधविश्वास, कुरीतियां उत्पन्न करता है।
7. अपनी मातृभाषा, राष्ट्रभाषा को छोड़कर अपने देश में विदेशी भाषा को प्राथमिकता देता है, जैसे-अंग्रेजी में निमंत्रण पत्र छपवाता है।
8. जो दूध-घी, मसाले आदि में मिलावट करके बेचता है। झूठ बोलकर, कम तोल कर ठगता है।

ऐसे देशद्रोही क्षमा के योग्य नहीं, इन्हें अपराध की सजा देनी चाहिए।

www.thearyasamaj.org

सर्वगुण सम्पन्न श्री रामचन्द्र जी का जीवन-चरित्र

गतांक से आगे

-राजवीर सिंह आर्य, बहादुरगढ़

इसके पश्चात् वे दानों भाई ऋष्यमूक पर्वत पर पहुंच गये, जहां उनको वानरों के अधिपति बलवान सुग्रीव ने देखा और वह उनको देखकर भयभीत हुआ। सभी दिशाओं की ओर देखते हुए वहाँ से चले जाने का निश्चय करने लगा। तदन्तर सुग्रीव का मन्त्री बोलने में पण्डित चतुर हनुमान यह वाक्य बोला " कि हमें यह घबराहट छोड़ देनी चाहिए, क्योंकि यह मलय पर्वत है, यहाँ बालि का भय नहीं हो सकता।" हनुमान के वाक्य सुनकर सुग्रीव पुनः हनुमान से यह वचन बोला "मुझे शंका है कि ये दोनों बलवान पुरुष बाली के गुप्तचर हैं, क्योंकि राजाओं के बहुत से मित्र होते हैं इसीलिए हे वानर इनको जानना चाहिए कि ये कौन हैं और किस प्रयोजन से ये यहाँ उपस्थित हैं।" सुग्रीव का तात्पर्य समझकर हनुमान उन दोनों राघवों के समीप गया। हनुमान ने अपना भेष एक भिक्षुक का बनाया और नम्रता पूर्वक उन दोनों भाइयों के समीप गया। अभिवादन करने के पश्चात् हनुमान दोनों राघवों से मधुरवाणी में बोला कि "राजर्षि और देवताओं के तुल्य आप तपस्वी ब्रह्मचारी इस देश में किस प्रकार पधारे हैं? सिंह के समान कंधो वाले, महाउत्साही तथा लोहदण्ड के समान लम्बी भुजाओं वाले जो धनुष भी धारण किये हो जो साक्षात प्रज्वलित सर्प के समान लग रहे हैं। मेरे इस प्रकार भाषण करने पर आप कैसे नहीं बोलते, आपको भी मुझसे भाषण करना चाहिए। वानरों में श्रेष्ठ एक सुग्रीव नामा धर्मात्मा अपने वीर भाई से निकाला हुआ, दुःखी होकर इधर-उधर घूम रहा है। मैं हनुमान नामक वानर उसी महात्मा का भेजा हुआ आया हूँ और वह धर्मात्मा आपसे मैत्री करना चाहते हैं।"

हनुमान के उक्त वाक्य सुनकर प्रसन्न हुये श्रीमान राम अपने छोटे भाई लक्ष्मण से बोले "यह हनुमान कपिराज महात्मा सुग्रीव का मन्त्री है और सुग्रीव से हमारी मैत्री कराने की इच्छा रखता है। हे सौमित्रे! स्नहे से भरे हुए, शत्रुओं को दमन करने वाले तथा वाक्य के जानने वाले सुग्रीव के इस मन्त्री ने मधुर वाक्यों द्वारा ऐसा भाषण किया है कि ऋग्वेद की शिक्षा पाया हुआ, यजुर्वेद व सामवेद को जानने वाला भी ऐसा भाषण नहीं कर सकता है, निःसंदेह इसने अनेक बार व्याकरण पढ़ा है, बहुत देर से बात करते हुए भी इसके भाषण में कोई त्रुटि नहीं दिखाई दी है और ना ही बोलते समय किसी अंग में दोष विदित होता है। इसकी विचित्र वाणी से किसका चित्त वशीभूत नहीं हो जाता,

चाहे तलवार लिये सामने शत्रु भी क्यों ना हो। हे निष्पाप जिस राजा को ऐसा दूत हो उनके सब कार्य सिद्ध हो जाते हैं।"

टिप्पणीः- ऋषि वाल्मिकी के बाद जितने भी लेखकों ने रामायण के उपर लिखा है सभी ने हनुमान को बन्दर बताया है। लेकिन वाल्मिकी रामायण इस बात का प्रमाण है कि हनुमान बन्दर नहीं बलिक वानर थे, जिनको वनों में रहना अति प्रिय होता है। श्लोकों में कपि शब्द आया है जिसके दो अर्थ होते हैं। एक तो बन्दर दूसरा श्रेष्ठ अब आप ही सोचिए कि बहुत से शब्दों के कई-कई अर्थ निकलते है तो प्रकरण अनुसार हमें उनको समायोजित करना होता है, नहीं तो अर्थ का अनर्थ हो जाता है और यही हमारे महाबली, महावीर, कुशल विमान चालक (पायलट), चारों वेदों के विद्वान, वैदिक मर्यादा का रक्षक, दुसरों की सहायता के लिए अपने प्राणों को संकट में डालने वाला, श्रेष्ठ मल्ल, युद्ध की सभी विधाओं को जानने वाला, निति निपुण, जितेन्द्रिय, बुद्धिमान, धर्मज्ञ, यज्ञादि कर्मो का करने वाला, सरलचित, मधुरवाणी बोलने वाला महाप्राज्ञ और बाल ब्रह्मचारी श्रेष्ठ पुरुष के साथ हुआ। जो व्यक्ति हनुमान जी को बन्दर मानते हैं क्या वे इतने भी पढ़े-लिखे नहीं कि वानर और बन्दर का अन्तर समझ सकें। राजा पवन का पुत्र और माता अंजना की कोख से जन्म लेने वाला बालक रामायण काल से लेकर आज तक पृथ्वी का सबसे बड़ा बाल ब्रह्मचारी माना जाता है। आश्चर्य की बात तो यह है कि राजा पवन, माता अंजना, देवी तारा व रूमा आदि का पूंछ होने या

www.thearyasamaj.org

बन्दर या बन्दरिया होने का वर्णन नहीं मिलता है तो फिर यह अज्ञानता व बुद्धिहीनता हनुमान जी के साथ ही क्यों की गई? हनुमान जी श्रीरामचन्द्र व लक्ष्मण के पास सुग्रीव द्वारा भेजने पर जाते हैं तो पण्डित का भेष बनाकर जाते हैं तो उस समय अपनी आकृति व पूंछ को कहां छिपाया? असंभव को संभव नहीं बनाया जा सकता।

दूसरा हम यहां पर आपको जानकारी दे रहे हैं जिसको पढ़कर हनुमान जी को बन्दर मानने का भ्रम टूट ही जायेगा। हठ व दुराग्रह का समाधान हमारे बस की बात नहीं लेकिन बुद्धिपूर्वक विचार किया जायेयगा तो बात अवश्य समझ में आ जायेगी। देखिए वाल्मिकी रामायण में श्लोक है:-

युवाभ्यां स हि धर्मात सुग्रीवः संख्यमिच्छति।
तस्य मां सविचं वितं वानर पवनात्मजम्॥

कि. सर्ग 2 श्लोक 24

अर्थात वह धर्मात्मा सुग्रीव आप दोनों के साथ मैत्री करना चाहते हैं, मुझे आप उनका मन्त्री पवनसुत वानर जाने। अब एक बात तो सिद्ध हो जाती है कि हनुमान जी सुग्रीव के मन्त्री थे। अब हम बात करते हैं अपने प्राचीन ग्रन्थ मनुस्मृति की जिसमें महाराज मनु 7/54 के अनुसार मन्त्री बनने वाले के अन्दर निम्नलिखित योग्यता होनी चाहिए। 1-स्वेदश में उत्पन्न होना, 2. वेद शास्त्रों का विद्वान, 3. शूरवीर जिसका लक्ष्य एवं विचार निष्फल ना हो एवं 4. जो उच्चकुल में पैदा हुआ हो। अब आप देखिए कि क्या हनुमान जी जिनके अन्दर ये सारी योग्यताएं थी एक बन्दर थे या महामानव? बन्दर तो बोल भी नहीं सकता और और ना ही उसका कोई कुल होता है। हमारी भी बड़ी विचित्र बाता है आज भी हम बन्दर को हनुमान मानकर उसे अच्छे-अच्छे पदार्थ खिलाते हैं लेकिन घर के आस-पास दिखाई देने पर उसके पीछे लट्ठ लेकर दौड़ते भी है। बड़े-बड़े उसके रोट करते हैं, मूर्ति स्थापना करते हैं, हनुमान चालीस पढ़ते हैं। लेकिन अब हनुमान जी के मन्दिर में विस्फोट हो जाता है, आतंकी (राक्षस) भाग जाते हैं और हनुमान जी विवश होकर मन्दिर से बाहर नहीं निकल पाते क्योंकि पुजारी जी ने ताला जो लगाया हुआ है। अरे भाई दूसरे मतों को मानने वाले विधर्मी लोग ऐसी बातों पर भद्दे-भद्दे चुटकुले बनाकर हमारा परिहास करते हैं एक समय में तीन-तीन परमात्मा के अवतार श्रीरामचन्द्र जी, हनुमान जी व परशुराम जी, हमारे से उत्तर नहीं बन पाता है लेकिन फिर भी यह अज्ञानता छोड़ने के लिए तैयार नहीं।

तीसरा कुछ आर्य भाई भी हनुमान जी और श्रीरामचन्द्र जी को सहपाठी बताते हैं इसमें कोई प्रमाण नहीं है। बल्कि स्पष्ट तौर पर प्रथम भेट वहीं ऋष्यमूक पर्वत पर ही होती है।

चौथा हम यहां बता देना चाहते हैं कि जैसे आजकल उपाधियां है पदमश्री, शौर्य चक्र, भारत केसरी, भारत रत्न, वेदलांकर, विद्या वाचस्पिती आदि-आदि उस समय में भी उपाधियां होती थी जैसे विधाधर, केसरी, महावीर, दशग्रीव, पुरुषोतम, इन्द्रजीत, द्विविद, महाबली, विष्णु, चतुर्वेदि, त्रिवेदी, द्विवेदी, वज्रंगी इत्यादि। हनुमान को तीन उपाधियां मिली हुई थी महावीर, महाबली और बजरंगी। इन उपाधियों से भी बहुत सा भ्रम फैला हुआ है जैसे रावण को दशग्रीव की उपाधि मिली हुई थी, इसका तात्पर्य तो यही है कि उसके अन्दर दस पुरुषों जितना बल था, लेकिन हमने उसके दस सिर ही लगा दिये। बेचारा किस करवट सोता होगा? हनुमान जी का सीता जी को खोजना, युद्ध में शूरवीरता दिखाना, महोदर पर्वत से औषधियों का शीघ्र यथाशीघ्र लाना, क्या एक बन्दर का कार्य हो सकता है? एक बाल ब्रह्मचारी अपने समय के विश्व के प्रसिद्ध योद्धा पर ऐसा कलंक लगाना हमें शोभा नहीं देता।

साधना के इच्छुक सम्पर्क करें

आत्म-शुद्धि-आश्रम' बहादुरगढ़ में आधुनिक ढंग से शौचालय, रसोई, स्नानगृह आदि से सुसज्जित कमरे साधक-साधिकाओं के लिए उपलब्ध हैं। यहाँ की विशेषता आश्रम में दोनों समय यज्ञ-उपदेशादि, पुस्तकालय, निकट अस्पताल व्यवस्था, एकान्त-शान्त वातावरण। आश्रम "दिल्ली के अन्दर- दिल्ली से बाहर"। रेल-बस आदि की चौबीस घण्टे सुविधा। इच्छुक साधक- साधिकायें सम्पर्क करें।

-व्यवस्थापक, दूरभाष: 01276-230195 चलभाष: 9416054195

www.thearyasamaj.org

47वां आश्रम स्थापना दिवस समारोह की झलकियां

(विवरण पढ़े पृष्ठ 6 पर)

www.thearyasamaj.org

47वां आश्रम स्थापना दिवस समारोह की झलकियां

(विवरण पढ़े पृष्ठ 6 पर)

www.thearyasamaj.org

47वां आश्रम स्थापना दिवस समारोह की झलकियां

(विवरण पढ़े पृष्ठ 6 पर)

www.thearyasamaj.org

47वां आश्रम स्थापना दिवस समारोह की झलकियां

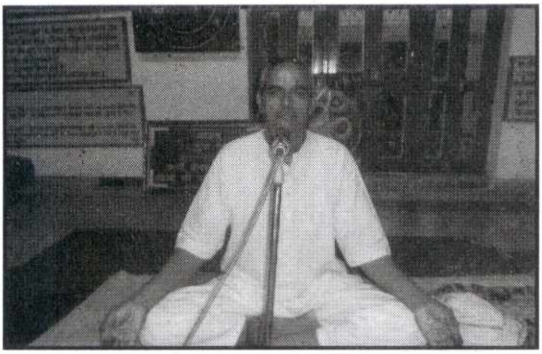
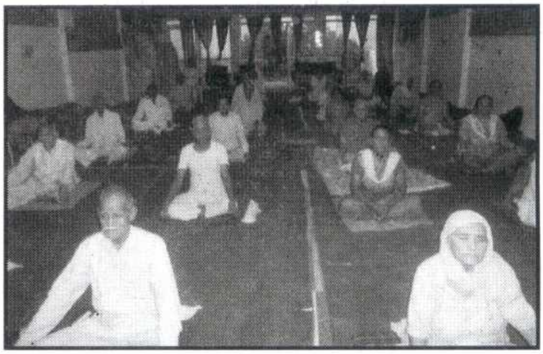

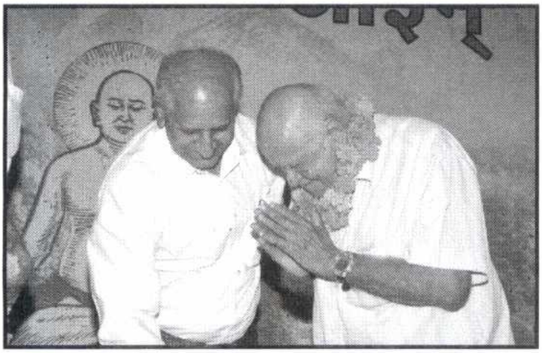
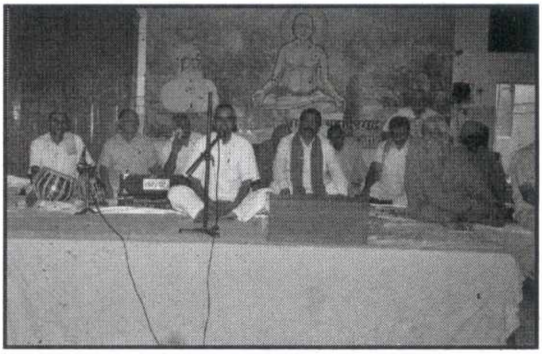
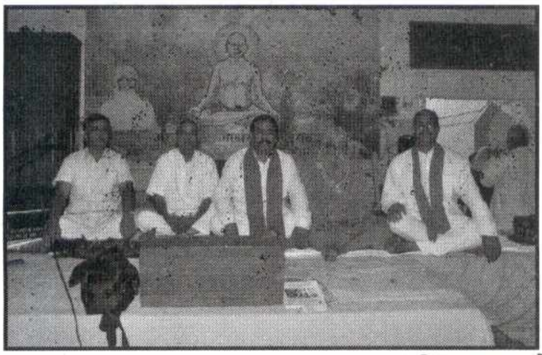
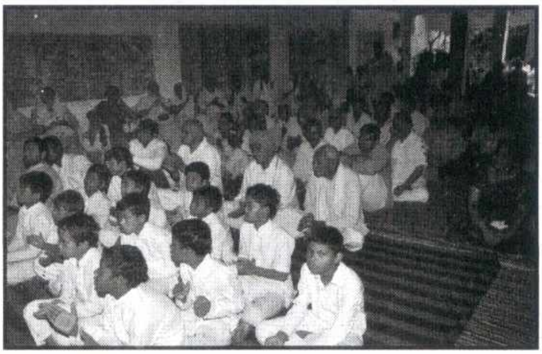

(विवरण पढ़े पृष्ठ 6 पर)

www.thearyasamaj.org

समग्र क्रान्ति के अग्रदूत महर्षि दयानन्द

- प्रस्तुति विक्रम देव शास्त्री

गुजरात (काठियावाड़) प्रान्त के मौरवी राज्य के एक छोटे से गांव टंकारा में सन् 1824 में एक औदीच्य ब्राह्मण कर्षण जी तिवारी व माता यशोदा बाई के घर दिनांक 12 फरवरी शनिवार के दिन एक पुत्र रत्न का जन्म हुआ। बालक का जन्म 'मूल' नक्षत्र में होने के कारण माता-पिता ने 'भूल शंकर' नाम रखा।

कर्षण जी एक सम्पन्नजन थे। सरकार में सम्मान था। औदीच्य ब्राह्मण सामवेदी थे परन्तु मूल शंकर ने बड़े परिश्रम से शुक्ल यजुर्वेद का अध्ययन किया था।

आत्मबोध- कर्षण जी तिवारी शिव के अनन्य भक्त थे। मूल शंकर जब 14 वर्ष के ही थे। उन्होंने पिता के आग्रह पर, माता के विरोध के बावजूद शिवरात्रि का उपवास किया। पिता गांव के शिव-मन्दिर में पूजा-अर्चना हेतु ले गये। उन्हें बताया गया कि जो भक्त पूरी रात जागकर शिव की अराधना करता है उसे साक्षात शिव के दर्शन होते हैं।

सभी पुजारी एवं भक्त जन शनै-शनै, निद्रा देवी की गोद में लीन हो गये। परनतु भूल शंकर आंखो पर पानी के छींट मार-मार कर शिव दर्शन की कामना लिए जागते रहे। यह क्या? देखते क्या हैं कि मूषक राज शिव मूर्ति पर चढ़कर उछल कूद मचा रहे हैं तथा शिव को अर्पित नैवेध का भक्षण कर रहे हैं तथा मूर्ति पर ही मल-मूत्र का त्याग कर रहे हैं। बालक के मन में बिजली की भान्ति विचार कौंध गया कि क्या यही वह जगत् नियन्ता शिव है जो इस श्रद्र से चूहे को भी नहीं हटा सकतें। नहीं-नहीं, यह सच्चा शिव नहीं हो सकता। तुरन्त पिता को जगाया। उनके सम्मुख अपनी शंका रखी। परन्तु कर्षण जी उनकी शंका का समाधान नहीं कर पाये। बालक मूल शंकर ने उपवास तोड़ दिया तथा घर लौट आया। बार-बार मन में एक ही विचार आ रहा था कि यह वह महादेव नहीं हो सकता जिसकी कथा सुनते आये हैं कि वे अपने पाशुपतास्त्र से बड़े-बड़े प्रचण्ड दैत्यों का संहार करते हैं, वे एक क्षुद्र से जीव चूहे को अपने ऊपर से नहीं हटा सकते।

मूल शंकर की दो छोटी बहनें तथा एक छोटा भाई था अर्थात् कर्षण जी की कुल चार संतानें थी। दो पुत्र और दो पुत्रियां। मूल शंकर सबसे बड़े थे।

वैराग्य की उत्पत्तिः- मूल शंकर 16 वर्ष के थे कि उनकी छोटी बहिन जिसकी आयु 14 वर्ष थी, उसकी हैजे से मृत्यु हो गई। परिवार के सभी लोग रूदन कर रहे थे परन्तु मूल शंकर की आंखों में आंसू नाम की कोई बूँद नहीं थे। उनके पिता ने तो उन्हें पाषाण हृदयी तक कह डाला। मूल शंकर तो जीवन-मृत्यु की गुत्थी को सुलझाने में लगा था। सोच रहा था कि क्या सभी को मृत्यु का ग्रास होना पड़ेगा।

यही प्रश्न कभी सिद्धार्थ (गौतम) के सम्मुख खड़ा हुआ था जब उन्हों ने एक रोगी को, एक कमर झुकाये वृद्ध को तथा एक मृतक को देखा था। गौतम के हृदय में भी वैराग्य उत्पन्न हो गया था तथा वह मृत्यु पर विजय पाने हेतु घर की शान शौकत छोड़कर निकल पड़े थे। उसी भाति आज पुनः मूल शंकर के हृदय में वैराग्य उत्पन्न हो गया। सिद्धार्थ से पुर्व भी लोगों का पाला रोग से, वार्दक्य से पड़ता था तथा वे परिजनों को मृत्यु का ग्रास होते देखते थें मूल शंकर से पूर्व भी लोग चूहे को शिवलिंग पर चढ़ते हुए देखा करते होंगे, परन्तु यह भाव मूल शंकर के ही मन में क्यों आया कि यह वास्तविक ईश्वर नहीं है तथा बहिन की मृत्यु पर उनको मृत्यु पर विजय प्राप्त करने की ठानी। स्पष्ट है कि कोई पुण्य आत्मायें ही होती है जो लोक कल्याणार्थ अपनी सुख सुविधाओं को तिलाञ्जलि

आनन्दपूर्ण जीवन हेतु

दु:ख, अशान्ति, तनाव, वैमनस्य आदि भावों को रूपान्तरित कर सुख शांति, प्रेम करूणा एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण, मानसिक दुर्भावनाओं से निर्जरा स्वयं के व्यक्तित्व का सम्यक् विकास और जीवन को आह्लादपूर्ण बनाने वाली मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया द्वारा लाभान्वित होने के लिए आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ जिला झज्जर, हरियाणा में आप सादर आमन्त्रित हैं।

—राजहंस मैत्रेय, मो. 9813754084

www.thearyasamaj.org

देने को उद्यत होती हैं।

बहिन की मृत्यु के दो वर्ष उपरान्त उनके चाचा जो उन से अगाध स्नेह रखते थे उनका देहावसान हुआ। उनकी मृत्यु पर मूल शंकर बहुत रोयें। हृदय में वैराग्य गहरा गया।

गृह त्याग- सन् 1846, बाईस वर्ष की आयु में, सच्चे शिव की खोज में मूल शंकर ने गृह का त्याग कर दिया। जब मूल शंकर घर से निकले थे तो उनके पास कुछ रूपये थे तथा तीन अंगूठियां डाली हुई थी जो उनसे तथा कथित साधुओं ने यह कहकर ठग ली कि जो सच्चे वैरागी होते है, उनको धन से यह मोह नहीं होना चाहिए।

मूल शंकर से शुद्ध चैतन्य:- घूमते घामते मूल शंकर सायला नामक स्थान पर पहुंचे जहां उनकी भेंट एक ब्रह्मचारी से हुई जिसने इन्हें नैष्ठिक ब्रह्मचारी होने का परामर्श दिया। मूल शंकर ने ब्रह्मचर्य व्रत लेकर गेरूए वस्त्र धारण कर लिए।

सिद्धपुर के मेले में पिता से भेंट:- किसी परिचित वैरागी ने कर्षण जी को पत्र द्वारा मूल शंकर के सिद्धपुर के मेले में होने की सूचना दी। सिद्धपुर के मेले में पिता ने धर दबोचा। मूल शंकर को चार सिपाहियों की मदद से घर को वापिस ले चले। परन्तु अवसर मिलते ही मूल शंकर सिपाहियों की नजर बचा कर पुनः खिसक गये।

संन्यास की दीक्षा:- अब तक शुद्ध चैतन्य पच्चीसवें वर्ष में प्रवेश कर चुके थे। नर्मदा तट पर घूमते हुए चाणोद के निकट उनकी भेंट स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती से हुई। शुद्ध चैतन्य से उनसे संन्यास की दीक्षा देने की प्रार्थना की। पहले तो उन्होंने इनकार किया और कहा कि मैं तो महाराष्ट्रियन हूँ। आप किसी गुजराती मूल के संन्यासी से दीक्षा लें। परन्तु बहुत अनुनय विनय के बाद उन्होंने शुद्ध चैतन्य को संन्यास की दीक्षा दी तथा उनको स्वामी दयानन्द सरस्वती नाम दिया।

विद्याध्ययन का प्रयास:- सन् 1854 में स्वामी दयानन्द हरिद्वार में स्वामी सम्पूर्णानन्द से मिले तथा उनसे व्याकरण, अष्टाध्यायी आदि पढ़ाने के लिए प्रार्थना की। उस समय स्वामी सम्पूर्णानन्द की आयु 108 वर्ष थी। उन दिनों उन्हों ने मौत व्रत रखा हुआ था। उन्होंने स्वामी दयानन्द को लिखकर बताया कि वे अब वृद्ध हो चुके हैं, इस हेतु पढ़ाने में असमर्थ हैं। उन्होंने दयानन्द को मथुरा में स्वामी विरजानन्द से जाकर विद्याध्ययन करने का परामर्श दिया। परन्तु दयानन्द जी ने वहां कुछ दिन रह कर अनुभव किया कि स्वामी सम्पूर्णानन्द सरस्वती एक समर्पित क्रान्तिकारी थे। उनके निर्देश पर सारे देश में 500 से अधिक संन्यासी अंग्रेजी राज्य के विरोध में वातावरण तैयार कर रहे थे।

आप आत्मशुद्धि आश्रम को निम्न प्रकार से सहयोग दे सकते हैं–

1. आत्मशुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य व आजीवन सदस्य बनकर, वार्षिक सदस्य स्वयं बनकर व अपने हितैषियों को बनाकर, विज्ञापन देकर अपने किसी हितैषी की स्मृति में उनका जीवनचरित्र छपवाकर।
2. बाल कल्याण सदन के छात्रों को पुस्तकें, कॉपी, वस्त्र देकर और धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय आदि सेवाकार्यों में आर्थिक सहयोग देकर एवं भोजन के लिए आटा, दाल, चावल आदि खाद्य सामग्री भेजकर। गौशाला में गौदान एवं खल-चूरी, दाना, भूसा आदि भेज सकते हैं।
3. बाल कल्याण सदन के छात्रों में से किसी एक को गोद लेकर उसका सम्पूर्ण व्यय 1000/- रुपये मासिक के हिसाब से साल भर का 12000/- रुपये छात्रवृत्ति देकर आप सहयोग कर सकते हैं।
4. आश्रम में प्रातराश, मध्याह्न का भोजन, मध्याह्नोपरान्त जलपान एवं रात्रिकाल के भोजन का व्यय लगभग 2000/- रुपये है। हमारी हार्दिक इच्छा है कि 365 यजमान बनें। एक दिन का भोजन देकर भोजन समस्या का समाधान कर सकते हैं।

कमरों के नाम लिखवाने के इच्छुक सम्पर्क करें : आपके प्रिय आत्मशुद्धि आश्रम में 1 कमरा 31000/- 1 कमरा 100000/-, आप सभी दानी महानुभावों से निवेदन है कि अपना अथवा अपने किसी स्वजन की स्मृति मध्य उनके नाम का पत्थर लगवाकर अपने स्वजन का नाम उज्ज्वल कर पुण्य एवं यश के भागी बनें।

धन्यवाद! –व्यवस्थापक आश्रमसम्पर्क सूत्र : 01276-230195, 9416054195

www.thearyasamaj.org

क्या आप जानते हैं?

- सुभाष चन्द्र गुप्ता

अच्छे विचार आपके स्वास्थ्य के लिए परमावश्यकः नकारात्मक चिंतन से स्वास्थ्य बिगड़ता है और सकारात्मक चिंतन से स्वास्थ्य सुधरता है। आप चिन्तन करें- 'मेरा स्वास्थ्य क्षीण हो रहा है', आपका स्वास्थ्य क्षीण होता चला जाएगा। आप चिंतन करें, 'मैं नीरोग और स्वस्थ हो रहा हूँ' आप उत्तरोत्तर स्वस्थ होते जाएंगे। उदाहरणः नार्मन कजिनस को बताया गया कि वह एक असाध्य रोग से पीड़ित है, जो उसे विकलांग करके दूसरों के आश्रित कर देगा। ऐसा हुआ कि उसने लॉरल और हार्डी की हंसाने वाली फिल्मों को देखा और अपने मानसिक चिन्तन को बदल डाला। उसने अपने मानसिक बल के आधार पर बीमारी को चुनौती दी कि वह उसपर पूर्ण विजय पाकर रहेगा। सचमुच ऐसा ही हुआ। अपनी पुस्तक 'एनेटोमी ऑफ एन इलनैस' में वह लिखता है कि चित्त में सकारात्मक विचारधारा आने से उसका तनाव ही दूर नहीं हुआ वरन् इस प्रकार चिंतामुक्त किए हुए स्वस्थ मन द्वारा उसका रोग बढ़ने से रूक गया। उसने पहले से अधिक शारीरिक स्वस्थता प्राप्त कर ली। मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि अच्छा स्वास्थ्य सोच बदल कर, अच्छी विचारधारा बनाकर प्राप्त किया जा सकता है। हमें चाहिए कि नकारात्मक व हीन चिंतन को बदल दें। कभी ऐसा न सोचें कि-"मुझे व्यायाम करना पसंद नहीं, मेरा प्राणायाम-योगासन करने या अच्छी पुस्तक का स्वाध्याय करने में मन नहीं लगता। मेरा वजन कभी घट नहीं सकता।"-ऐसे हीन व निकृष्ट विचारों को एक दम दूर झटक दें। स्वयं को वज़न घटाने, बीमारी मिटाने, जीवन को उन्नत बनाने के लिए मानसिक रूप से तैयार करें। इस बात पर दृढ़तापूर्वक विश्वास करें कि-हम जैसा सोचते हैं, वैसा बन जाते है- "As you thniketh, So you becometh", क्रतुमयः पुरुषः'-मनुष्य अपने विचारों, संकल्पों का बना हुआ है। फ्लोरिडा स्टेट यूनिवर्सिटी के मनोवैज्ञानिक गेरिभ डट्टन ने बताया कि अधिकांश लोगों को इस बात की जानकारी ही नहीं होती कि नकारात्मक सोच उनकी सेहत के लिए घातक साबित हो सकती है। वैज्ञानिकों का कहना है कि यदि आप सचमुच ही फिट, चुस्त-दुरुस्त होना चाहते हैं तो पहले अपनी सोच बदलिए, अच्छा सोचिए।

(2) फास्ट फूड-हितकारक या हानिकार?

(i) आलू चिप्स, फ्राइज़ से कैंसरः स्वीडन, ब्रिटेन, जर्मनी, नार्वे और अमेरिका के वैज्ञानिकों के अनुसार-तले, पिसे, अधिक स्टार्च, वाले और बेक किए पदार्थों (जैसे आलू चिप्स और फ्राइज़) में कैंसर कारक रसायन एक्राईलमाइड भारी मात्रा में होता है। इस सच्चाई को ध्यान में रखें और अंधाधुंध प्रचार एवं लुभावने विज्ञापनों से बचें। **(ii) लगभग सभी प्रकार के 'फास्ट फूड'** और संरक्षित खाद्य पदार्थों में कोई न कोई रंग मिलाया जाता है, जो हमारे स्वास्थ्य को नष्ट करता है। इस रंग से कब्ज, रक्त की कमी, दिमाग, गुर्दे, तिल्ली और जिगर जैसे प्रमुख अंगों के रोग उत्पन्न होते हैं। **(iii)** फास्ट फूड और संरक्षित या प्रोसेएड फूड में मौजूद ट्रांस फैट्स भी सेहत के लिए अत्यन्त हानिकारक होते हैं।

(3) साइनस के रोग में शहद बेहद फायदेमन्दः- ओटावा यूनिवर्सिटी में हुए एक शोध के अनुसार, जिन साइनस के बैक्टीरिया (साइनीसाइटिस-नाक में संक्रमण के लिए जिम्मेदार बैक्टीरिया) की परत को 'एंटीबायोटिक' भी भेद नहीं सकते, उनको शहद भेदकर नष्ट कर देता है। इसके लिए, न्यूजीलैंड का मनुका हनी और यमन का सिडर हनी (शहद के प्रकार) साइनस के इलाज में विशेष तौर पर कारगर पाए गए हैं।

(4) कैक्टस-अनेक रोगों में लाभदायकः

(i) कैक्टस में मौजूद पोषक तत्वः इसकी बड़ी-बड़ी पत्तियों में पाए जाते हैं भरपूर मात्रा में खनिज पदार्था जैसे पोटेशियम, कैल्शियम, आयरन और मैग्नीशियम और प्रचुर मात्रा में विटामिन्स-ए व सी। इसी कारण भारत और अमेरिका के कई देशों में इसे सूप, आचार व अन्य खाद्य पदार्थो के रूप में प्रयोग किया जाता है। **(ii)** कैक्टस दर्द निवारक के रूप में बहुत उपयोगी है। **(iii)** फ्लेवानाइड से भरपूर होने के कारण इसका इस्तेमाल एंटी आक्सीडेंट और कैंसर रोधी के रूप में भी किया जाता है। **(iv)** इसे त्वचा के छिलने, कीड़े के काटने या एलर्जी दूर करने में इस्तेमाल किया जा सकता है। **(v)** यह टाइप 2 डायबिटीज व मोटापे को दूर करने में भी काम आता है। **(vi)** कैक्टस की सीने पेड्रो प्रजाति का जूस किडनी व ब्लैडर की जलन

www.thearyasamaj.org

दूर करने में इस्तेमाल किया जा सकता है। (**vii**) यह तेज बुखार में भी बेद कारगर है। (**viii**) **तनाव भी मोटापा बढ़ाता है (Worry=Weight):** गरवन इंस्टीच्यूट ऑफ मेडिकल रिसर्ज के शोध से पता चला है कि-तनावयुक्त शरीर में एक ऐसा मॉलीक्यूल NPY (Neuro Peptide Y) निकलता है जो फैट सैल्स के रिसैप्ट्रस को आकर में मोटा और संख्या में बड़ा होने के लिए बाध्य करता है। परिणाम होता है-अधिक वसायुक्त पदार्थो की चाह, भूख में वृद्धि और शरीर का मोटापन।

इसलिए तनाव से बचें और तनाव मुक्ति के लिए करें योग-प्राणायाम और साथ में खाएं फल-सब्जियां। योग-प्राणायाम से कार्टीसोल, नामक उस स्ट्रेस हार्मोन में भी कमी आती है जो मेटॉबालिज्म का रेट कम करता है और फैट बढ़ाता है। फल-सब्जियों से तथा व्यायाम-प्राणायाम से एंडोर्फिन नामक हैप्पी हार्मोन की वृद्धि हो जाती है। इस वृद्धि से तनाव घटता है और मोटापे के बढ़ने की प्रक्रिया भी रूकती है।

– 159/ए.जी.सी.आर. एन्क्लेव, दिल्ली

आत्म शुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य

1. श्रीमती इन्दुपुरी जे.के. मेमोरियल ट्रस्ट मोगा, पंजाब
2. चौ. नफेसिंह जी राठी पूर्व विधायक क्षेत्र बहादुरगढ़, हरि
3. श्री वीरसेन जी मुखी कीर्तिनगर, दिल्ली
4. श्री बलजीत सिंह जी उपाध्यक्ष किसान मोर्चा भाजपा दिल्ली प्रदेश, नजफगढ़
5. आचार्य यशपाल जी कन्या गुरुकुल खरखोदा, हरि.
6. श्री हरि सिंह जी सैनी, प्रधान आर्य समाज, हिसार
7. चौ. मित्रसेन जी सिन्धु आर्य, उद्योगपति, रोहतक
8. श्री सत्यपाल जी वत्स काष्ठ मण्डी, बहादुरगढ़
9. श्री जयकिशन जी गहलौत, नजफगढ़, दिल्ली
10. श्री रमेश कुमार राठी, ७ विश्वा, जटवाड़ा मो, बहादुरगढ़
11. श्री जे.आर. वरमानी, गुड़गाँव, हरियाणा
12. श्रीमती नीतू गर्ग, ईशान इंस्टीट्यूट, ग्रेटर नोएडा
13. श्री रामवीर जी आर्य, सै. ६, बहादुरगढ़
14. श्री जितेन्द्र कुमार जी आर्य, सूरत, गुजरात
15. श्री राव हरिशचन्द्र जी आर्य, नागपुर
16. श्री ओमप्रकाश आर्य, आर्यसमाज कीर्तिनगर, नई दिल्ली
17. श्री देव प्रकाश जी पाहवा, राजौरी गार्डन, दिल्ली
18. श्री जयदेव जी हसीजा 'प्रेमी' वानप्रस्थी, गुड़गांव
19. स्वामी वेदरक्षानन्द जी सरस्वती, आर्ष गुरुकुल कालवा
20. रविन्द्र कुमार आर्य-सैक्टर ६, बहादुरगढ़
21. नेहा भटनागर, सुपुत्र सुरेश भटनागर, तिलकनगर, फिरोजाबाद
22. अमित कौशिक, सु. श्री महावरी कौशिक, मलिक कॉलोनी, सोनीपत
23. सरस्वती सुपुत्र वे.के. ठाकुर, न्यू सिया लाईन लखनऊ (उ.प्र.)
24. दीपक कुमार, सुपुत्र श्री भगवान् गिरि, बोकारो, झारखण्ड
25. कृष्णा दियोरी भरेली, सु. श्री शैलेन्द्र नाथ दियोरी, गोहाटी, असम
26. रवि कुमार जायसवाल, सुपुत्र श्री आर.एस. जायसवाल, गोपालगंज, बिहार
27. श्री सुरेश कौशिक, मॉडल टाउन, बहादुरगढ़
28. श्री गौरव, सु. श्री कामेश्वर प्रसाद, हनुमान नगर, कंकड़बाग, पटना
29. श्री परमजीत सिंह, सुपुत्र सरदार गुरनाम सिंह, दसुआ (पंजाब)
30. श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंघल, शक्ति विहार, दिल्ली
31. श्री प्रेम कुमार जी गर्ग, दनकौर (उ.प्र.)
32. श्री ओमप्रकाश जी अग्रवाल, ईसान इन्स्टीट्यूट, नोएडा
33. कु. शिखा सिंह, सु. श्री सीपीसिंह, सुभाष नगर, हरदोई उ.प्र
34. कु. नेहाराज, सु. श्री राजन कुमार, बाकरगंज पटना (बिहार)
35. कु. गितिका, सु. श्री प्रमोद शुक्ला, आजादनगर हरदोई उ.प्र.
36. कु. विदिशा, सु. श्री राजकमल रस्तोगी, इन्दिरा चौक बदायूं उ.प्र
37. श्री मनोज, सु. श्री जे.एस.विस्ट, पूर्वी ग्रेटर कैलाश दिल्ली
38. कु. सविता, सु. रमेश चन्द्र यादव, रानीबाजार, सहारनपुर
39. श्री हर्ष कुमार भनवाला, सैक्टर-1, रोहतक (हरि.)
40. श्री ईश्वरसिंह यादव, गुड़गांव, हरियाणा
41. श्री वेदपाल जी आर्य, महावीर पार्क, बहादुरगढ़
42. श्री बलवान सिंह सोलंकी, शक्तिनगर, बहादुरगढ़
43. मा. हरिश्चन्द्र जी आर्य, टीकरी कलां, दिल्ली
44. श्री सोहनलाल जी मनचन्दा, शिवाजीनगर, गुड़गांव
45. श्री स्वदीप दास गुप्ता, जमशेदपुर, झारखण्ड
46. श्री अजयभान सिंह यादव, कानपुर, उ.प्र.
47. श्री स्वदीप दास जी गुप्ता, जमशेदपुर, झारखण्ड
48. श्री अजयभान यादव, कानपुर सिटी, उ.प्र.
49. चौ. हरनाथ सिंह जी राघव, खेड़ला, गुड़गांव
50. श्री देवीदयाल जी गर्ग, पंजाबीबाग, नई दिल्ली
51. श्री आर.के. बेरवाल, रोहिणी, नई दिल्ली
52. पं. नत्थूराम जी शर्मा, गुरुनानक कॉलोनी बहादुरगढ़
53. श्री आर.के. सैनी, हसनगढ़, रोहतक
54. श्री राजकुमार अग्रवाल, मुल्तान नगर, दिल्ली
55. श्रीमती कुसुमलता गर्ग, दिलशाद गार्डन, दिल्ली
56. श्री बलवान सिंह, साल्हावास, झज्जर
57. श्री अजीत चौहान, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली
58. यज्ञ समिति झज्जर
59. श्री उम्मेद सिंह डरोलिया, काठमण्डी, बहादुरगढ़
60. श्री अम्बरीश झाम्ब, गुड़गाँव, हरियाणा
61. श्री गणेश दास एवं श्रीमती गरिमा गोयल, नया बाजार,दिल्ली
62. श्री राजेश आर्य, शिवाजी नगर, गुडगांव
63. मास्टर प्रहलाद सिंह गुप्ता, रोशन पुरा,गुडगांव, (हरियाणा)
64. श्री राजेश जी जून, उपचेयरमैन, जिला परिषद झज्जर
65. श्री अनिल जी मलिक, पूर्व उपाध्यक्ष, टीचर कॉलोनी बहादुरगढ़
66. द शिव टर्बो ट्रक यूनियन, बादली रोड, बहादुरगढ़
67. श्री राधेश्याम आर्य, रामनगर, त्रिनगर, दिल्ली

www.thearyasamaj.org

गृह की शोभा गृहिणी से ही है

- डॉ. अशोक आर्य, मण्डी डबवाली

वेद में नारी को समाज में ऊँचा स्थान दिया गया है। इसे माता कहा गया है। माता उसे कहते हैं, जो निर्माण करे। माता संतान को पैदा ही नहीं करती, उसका निर्माण भी करती है। माता ही संतान को सुसंतान बना कर उन्नत मार्ग पर अग्रसर करती है तथा माता जब कुमाता बन जाती है तो संतान का विनाश भी करती है, किन्तु ऐसी बुद्धिहीन, कर्तव्य विहीन माता वास्तव में माता कहलाने का अधिकार नहीं रखती। जो माता संतान को ऊँचे आसन तक पहुँचाने के लिए तप करती है, सुख सुविधाओं को त्याग, भूखे रह कर भी उसके सुखों में कमी नहीं आने देती, माता तो वह ही है। ऐसा कार्य जग की प्रत्येक माता करना चाहती है, इस कारण ही वह माता है। इस कारण ही विश्व में नारी का सम्मान है। किन्तु मध्य युग में नारी के सम्मान का ह्रास हुआ है। इसका कारण गुलामी तथा वेद विद्या का अभाव ही कहा जा सकता है। वेद में नारी को जग की जननी तथा त्याग की मूर्ति कहते हुए इसे उच्च आसन देने का आदेश किया है। नारी को प्रशस्ति पूर्ण स्थान देने के लिए वेद में अनेक विध नारी का गुण किया गया है। ऋग्वेद 3.53.4 में कहा गया है कि गृहिणी अर्थात् नारी ही गृह है, घर है। नारी के बिना गृह की कल्पना भी नहीं की जा सकती। मन्त्र इस प्रकार दिया है:-

जायेदसन्य मघवन त्सेदु योनीः
तदित तवा युक्ता हरयो वहन्तु।
यदा कदा च सुनवाय सोमम
अग्निष्ट्वा दूतो धन्वात्यच्छ।

ऋग ।।3.53.4।।

शब्दार्थ- हे (मघवन) हे ऐश्वर्य युक्त इंद्र (जाया इत) पत्नी ही (असतं) घर है (उ) और (सा इत) वह ही (योनिः) संतान उत्पादन का आधार है (तट इत) उसी घर में वही (युक्ताः) जूते हुए (हरयः) घोड़े (त्वा) तुझ को (वहन्तु) ले जावें (यदा कदा च) और जब कभी (सोमम) सोम रस को (सुनवाम) निकालेंगे (दूतः अग्निः) तब तुम्हारा दूत अग्नि (त्वा) तेरे (अच्छ) पास (धन्वाती) दौड़कर जाए।

भावार्थ:- हे इंद्र! पत्नी ही घर है। कुलवृद्धि का आधार भी वही है। तुझे उसी घर में जुते हुए घोड़े लावें। तुम्हारा दूत अग्नि तब ही तुम्हारे पास जाएगा, जब हम सोमरस निकालेंगे।

यह मन्त्र हमें बताता है कि गृहस्थ का आधार क्या है? उसका मूल क्या हैं? तथा उसके मूल में क्या पदार्थ डालने की आवश्यकता है? इन बातों का उतर देते हुए मन्त्र कहता है कि:-

पत्नी ही घर का आधार है। संस्कृत में कहा भी है कि "न गृहं गृहमित्याहूः गृहिणी गृहमुच्यते" अर्थात् घर को घर नहीं कहते अपितु गृहिणी को ही घर कहते हैं। कहा भी है कि गृहिणी के बिना घर में भूत का डेरा होता है। गृह में क्या कार्य होता है? गृह में मुख्य कार्य होता है गृह की सुरक्षा, गृह की व्यवस्था, गृह का संचालन, गृह का निरीक्षण तथा समुन्नयन। यह सब कार्य गृहपत्नी अथवा नारी ही कराती है। पुरुष तो गृह व्यवस्था के साधन अर्थात् धनोपार्जन के लिए प्रायः अधिकांश समय गृह से बाहर ही रहता है। इस कारण इन सब कार्यों को वह नहीं कर सकता। इन कार्यों को करने के लिए अधिक समय वहां उपस्थित होना आवश्यक होता है, किन्तु पुरुष के लिए ऐसा सम्भव न हो पाने के कारण यह सब व्यवस्था पत्नी ही देखती है। अतः पत्नी के बिना यह सब कार्य व्यवस्था ठीक से नहीं हो पाती, इस कारण गृह के इन कार्यों के लिए पत्नी का विशेष महत्व इस मन्त्र में बताया गया है। यदि गृहिणी न हो तो गृह की यह सब व्यवस्था छिन्न भिन्न हो जाती है। तभी तो गृहिणी के बिना घर को भूत बंगला अथवा भूतों बंगला अथवा भूतों का निवास कहा गया है।

मन्त्र न केवल पत्नी के कर्तव्यों पर ही प्रकाश डालता है अपितु उस के महत्व का भी वर्णन करता है। यदि हम गृहस्थ को एक वृक्ष का अस्तित्व ही नहीं होता। मूलाधार ही समग्र वृक्ष का भार वहन करता है। इस आधार पर हम कह सकते हैं कि नारी गृह का मूल आधार होता है। उसके कन्धों पर ही पूरा परिवार खड़ा होता है। नारी के बिना यह स्वपन साकार नहीं हो सकता। वृक्ष की जड़ तो केवल वृक्ष को खड़ा रखने तथा उसे भोजन पहुँचाने का कार्य करती है किन्तु नारी न केवल जड़ का अर्थात् परिवार का आधार अथवा परिवार के खड़े होने की परिकल्पना को

www.thearyasamaj.org

साकार करने वाली होती है अपितु संतानोत्पति का कार्य अर्थात् बीज व भूमि का कार्य भी करती है। नारी ही गृह की सश्रीकता का आधार है। नारी के बिना संतानोत्पति संभव नहीं। नारी के बिना परिवार की समृद्धि भी संभव नहीं। अत: नारी परिवार की अच्छी समृद्धि का कारण होती है। एक उत्तम नारी ही परिवार में सुखों की वर्षा करती है। तभी तो इसे योनि अथवा मूल कहा गया है। यह परिवार का मूल कारण होती है। परिवार के सुखों की वृद्धि का चिंतन नारी को ही होता है। नारी के बिना किसी प्रकार के सुख व समृद्धि की कल्पना ही नहीं की जा सकती।

ऊपर कहा गया है कि नारी गृह की सुश्रीकता होती है। इसका उत्तर देते हुए मन्त्र कहता है कि यह सोम से आती है। सुश्रीकता के लिए सौम्य गुणों का होना आवश्यक है। सौम्य गुण ही इसका मूल आधार हैं। यह सौम्यगुण ही परिवार की श्रीवृद्धि करते हैं, क्योंकि यह कार्य नारी करती है, इसलिए नारी का सौम्यगुणों से युक्त होना आवश्यक है। यदि नारी बात बात पर झगड़ती है तो परिवार का संचालन व व्यवस्था ढीली हो जाती है। यह सुव्यवस्था न रह कर कुव्यवस्था हो जाती है। सुव्यवस्था के लिए सौम्यता आवश्यक है। अत: नारी में सौम्य गुण की प्रचुर मात्रा आवश्यक है। इंद्र तथा जीवात्मा की उपस्थिति भी सौम्यगुण के साथ ही होती है। वहीं आत्मिक बल होता है तथा जहां इंद्र वा जीवात्मा तथा आत्मिक बल हो वहां श्रीवृद्धि भी निरंतर होती रहती है।

अत: इस मन्त्र के आधार पर हम संक्षेप में कह सकते हैं कि नारी ही गृह का आधार है, गृह अथवा परिवार का मूल भी नारी ही है, सौम्य गुण इस मूल को पुष्ठ करते हैं। यह पुष्टि का ही परिणाम होता है कि आत्म बल, सात्विकता, पवित्रता, सुशीलता तथा विनय आदि गुणों का आधान होता है। अत: परिवार के निर्माण व पुष्टि के लिए सौम्यता का होना आवश्यक है। यह सौम्यता नारी में विपुल मात्रा में होने के कारण ही नारी को ही, गृहिणी को ही गृह अर्थात् घर कहा गया है। इसके बिना घर की कल्पना भी संभव नहीं। इसलिए परिवार में नारी का सम्मान हो ताकि वह खुश रहते हुए सौम्यगुणों को बढ़ती रहे।

-104, शिप्रा अपार्टमैन्ट, कौशाम्बी, जिला गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश

धूप अगरबत्ती एवं गायत्री महिमा हवन सामग्री

ऋतु अनुकूल

उत्तम प्रकार की जड़ी-बूटियाँ द्वारा संस्कार विधि के अनुसार
केवल उपकार की भावना से लागत-मात्र मूल्यों पर उपलब्ध

विशिष्ट	23.00	रु. प्रति किलो
उत्तम	28.00	रु. प्रति किलो
विशेष	45.00	रु. प्रति किलो
डीलक्स	65.00	रु. प्रति किलो
सुपर डीलक्स	120.00	रु. प्रति किलो

इसके अतिरिक्त अध्यात्म सुधा विधि के अनुसार हर प्रकार की
हवन सामग्री आर्डर पर तैयार की जाती है।

निर्माता :

मै. लाजपतराय सामग्री स्टोर

856, कुतुब रोड, दिल्ली-110006

फोन : दुकान-23535602, 23612460, फैक्ट्री-32919010, निवास-25136872

www.thearyasamaj.org

हंसो और हंसाओ

\- रवि शास्त्री, आश्रम

1. पति (पत्नी से)- तुम खाना बहुत अच्छा बनाती हो,
पत्नी-तुम कितना भी मस्का लगाओ खाना तुम्हें ही बनाना पड़ेगा।
2. मां आपने मुझे पैदा होने से पहले देखा था? (पप्पु ने आश्चर्य से अपनी मां से पुछा)
मां-नहीं तो बेटा
पप्पु-तो फिर पैदा होने के बाद आपने मुझे पहचाना कैसे?
3. पापा अपने बेटे पप्पु से-अगर अबकी बार पप्पु तू फैल हो गया तो मुझे पापा मत कहना
रिजल्ट आने के बाद
पापा-पप्पु तेरे रिजल्ट का क्या हुआ
पप्पु-छोड़ यार मदनलाल तुने बाप कहने का दर्जा भी खो दिया।
4. नरेश ने नया ट्रैक्टर लाकर सुरेन्द्र को ड्राईवर रख लिया। नरेश सुरेन्द्र दोनो खेत में जाने लगे अचानक हल्का सा झटका लगा। नरेश बोला-यार सुरेन्द्र क्या हो गया।
सुरेन्द्र-कुछ नहीं यार गेयर बदला है।
नरेश-तु ट्रैक्टर से अभी उतरजा में तुझे ड्राईवर नहीं रख सकता।
सुरेन्द्र-नरेश जी ये तो बताओ क्या हो गया।
नरेश-आज तुने बिना बताये गेयर बदला है कल ट्रैक्टर बदल लिया तो।
5. फत्तु-रलदु तेरे बेटे ने ब्लैड खा लिया था तुने डाक्टर क्यों नहीं बुलाया।
रलदु-मुझे दाढ़ी बनाने के लिए दुसरा ब्लेड मिल गया था।

सम्पर्क करें

पारिवारिक अनुचित व्यवहारों से उत्पन्न मानसिक उद्विग्नता, वैमनस्य, ईर्ष्याद्विष आदि में मनोवैज्ञानिक समाधान, वेद, दर्शन, उपनिषद गीता आदि साहित्य पर सुबोध व युक्ति पूर्ण प्रवचन वैदिक-यज्ञ तथा प्रभावोत्पादक ध्यान-योग साधना शिविरों हेतु सम्पर्क करें :

राजहंस मैत्रेय, मो. 9813754084

इन्सान की बात की है

\- डा. दर्शन लाल जी आजाद, पानीपत

न हिन्दू की बात न मुसलमान की बात की है,
दयानन्द ने केवल इन्सान की बात की है
सत्यवादी ने धर्म व ईमान की बात की है
कल्याणकारी ने विश्व कल्याण की बात की है।

उसने न किसी मजहबी दुकान की बात की है
घृणा की दीवारें गिराई उत्थान की बात की है
महाज्ञानी ने वेद के ज्ञान की बात की है
दया, तप, योग्य और ध्यान की बात की है

प्रेम भाईचारे के आदर्श महान की बात की है
देश व धर्म के लिए बलिदान की बात की है
उत्तम गृहस्थी नेक सन्तान की बात की है
सोलह संस्कारों से निर्माण की बात की है

अपना जीवन देकर अहसान की बात की है
भला ही सोचा न नुकसान की बात की है
उसने चीन, रूस जापान की बात की है
सीमा तोड़कर सारे जहान की बात की है

आदर्शवादी ने हमारे सम्मान की बात की है
दास्ता के युग में आजाद हिन्दुस्तान की बात की है
अंधी श्रद्धा नहीं विवेक विज्ञान की बात की है
सच्ची शिक्षा उचित खान-पान की बात की है

झूठे धर्म के फीके पकवान की बात की है
उसने बाईबल, गीता, कुरान की बात की है
आजाद के अन्दर के शैतान की बात की है
कण-कण में व्यापक भगवान की बात की है।

जीवन में सफलता के लिए विवेक, धैर्य और साहस की अत्यन्त आवश्यकता होती है, अत: हमें इन तीनों का शीघ्र ही विकास करना चाहिए।

—राजहंस मैत्रेय

www.thearyasamaj.org

सत्यार्थ प्रकाश प्रश्नोत्तरी भूमिका के अनुसार प्रश्नोत्तर

- कन्हैया लाल आर्य

प्र.1 परमेश्वर का नाम अग्नि क्यों है?

उ. स्व प्रकाश स्वरूप होने से तथा जो ज्ञानस्वरूप, सर्वज्ञ, जानने, प्राप्त होने और पूजा करने योग्य है, इसीलिए परमेश्वर का नाम 'अग्नि है।

प्र.2 परमेश्वर का नाम 'मनु' क्यों है?

उ. विज्ञान स्वरूप होने से परमेश्वर का नाम 'मनु' है।

प्र.3 परमेश्वर का नाम 'प्रजापति' क्यों है?

उ. सब का पालन करने से परमेश्वर का नाम प्रजापति है।

प्र.4 परमेश्वर का नाम 'इन्द्र' क्यों है?

उ. परम ऐश्वर्य वाला होने से परमेश्वर का नाम 'इन्द्र' है।

प्र.5 परमेश्वर का नाम 'प्राण' क्यों है?

उ. सबका जीवन मूल होने से परमेश्वर का नाम 'प्राण' है।

प्र.6 परमेश्वर का नाम 'ब्रह्म' क्यों है?

उ. जो सब के ऊपर विराजमान, सबसे बड़ा अनन्त बल युक्त होने से परमेश्वर का नाम 'ब्रह्म' है।

प्र.7 परमेश्वर का नाम 'ब्रह्मा' क्यों है?

उ. सब जगत को बनाने वाला होने से परमेश्वर का नाम 'ब्रह्मा' है।

प्र.8 परमेश्वर का नाम 'विष्णु' क्यों है?

उ. सर्वत्र व्यापक होने से परमेश्वर का नाम 'विष्णु' है।

प्र.9 परमेश्वर का नाम 'रूद्र' क्यों है?

उ. दुष्टों को दण्ड देकर रूलाने से परमेश्वर का नाम 'रूद्र' है।

प्र.10 परमेश्वर का नाम 'शिव' क्यों है?

उ. मंगलमय और सबका कल्याणकर्ता होने से परमेश्वर का नाम 'शिव' है।

प्र.11 परमेश्वर का नाम 'अक्षर' क्यों है?

उ. सर्वत्र, व्याप्त, अविनाशी होने से परमेश्वर का नाम 'अक्षर' है।

प्र.12 परमेश्वर का नाम 'स्वराट्' क्यों है?

उ. स्वयं प्रकाशस्वरूप होने से परमेश्वर का नाम 'स्वराट्' है।

प्र.13 परमेश्वर का नाम 'कालाग्नि' क्यों है?

उ. प्रलय में सब का काल और काल का भी काल है इसीलिए परमेश्वर का नाम 'कालाग्नि' है।

प्र.14 परमेश्वर का नाम 'दिव्य' क्यों है?

उ. जो प्रकृति आदि दिव्य पदार्थो में व्याप्त है इसीलिए परमेश्वर का नाम 'दिव्य' है।

प्र.15 परमेश्वर का नाम 'सुपर्ण' क्यों है?

उ. जिसके उत्तम पालन और पूर्ण कर्म हैं इसीलिए परमेश्वर का नाम 'सुपर्ण' है।

प्र.16 परमेश्वर का नाम 'गरुत्मान' क्यों है?

उ. जिसका आत्मा अर्थात् स्वरूप महान् है इसीलिए परमेश्वर का नाम 'गरुत्मान्' है।

प्र.17 परमेश्वर का नाम 'मातरिश्वा' क्यों है?

उ. जो वायु के समान अनन्त बलवान् है इसलिए परमेश्वर का नाम 'मातरिश्वा' है।

प्र.18 परमेश्वर का नाम 'भूमि' क्यों है?

उ. जिसमें सब भूत प्राणी होते हैं इसीलिए परमेश्वर का नाम 'भूमि' है।

प्र.19 परमेश्वर का नाम 'विराट' क्यों है?

उ. जो बहु प्रकार के जगत् को प्रकाशित करे, इससे 'विराट्' नाम से परमेश्वर का ग्रहण होता है।

प्र.20 परमेश्वर का नाम 'विश्व' क्यों है?

उ. जिसमें आकाश आदि सब भूत प्रवेश कर रहे हैं अथवा जो इन में व्याप्त हो कि प्रविष्ट हो रहा है। इसीलिए उस परमेश्वर का नाम 'विश्व' है।

प्र.21 परमेश्वर का नाम 'हिरण्यगर्भ' क्यों है?

उ. जो सूर्यादि तेजः स्वरूप पदार्थो का गर्भ नाम, उत्पत्ति और निवास स्थान है। इससे उस परमेश्वर का नाम 'हिरण्यगर्भ' है।

प्र.22 परमेश्वर का नाम 'वायु' क्यों है?

उ. जो चराचर जगत् का धारण, जीवन और प्रलय करता है और सब बलवानों से बलवान् है इससे उस परमेश्वर का नाम 'वायु' है।

www.thearyasamaj.org

बिना विचारे जो करे, सो पाछे पछताए

- अशोक सिसोदिया, आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़

एक गाँव में इक पण्डित का, रहता था परिवार,
एक नेवला भी था उनका, दोनों देते प्यार।
उनका एक पुत्र भी था, छोटा सा बहुत ही सुन्दर,
पति-पत्नी की जान बसी थी, उस बालक के अन्दर।

इक दिन पत्नी बोली पति से, चली भरन को पानी,
चलते-चलते रूकी ठिठके वह, सुन पण्डित की वाणी।
पण्डित बोला लल्लन की माँ, ठाकुर ने बुलवाया,
तुरत-फुरत उससे मिलकर मैं, अभी लौटकर आया।

मैं जाता ठाकुर ड्योढ़ी पर, तुम जल भर घर जाओ,
भूखे होंगे नकुल औलल्न, जाकर उन्हें खिलाओ।
कहकर चला गया वो पण्डित ठाकुर जी के घर की ओर
पझिडतानी पानी भरती थी, थामें थी रस्सी का छोर।

घर के अन्दर तभी कहीं से, एक ख्याल था आया,
बढ़ा शिशु की ओर लपककर, अपना फन फैलाया।
किन्तु नकुल सामने आया, उसका रास्ता रोका,
देता रहा नकुल छल-बल से, उस दुश्मन को धोखा।

जूझ गया विकराल सर्व से, वो छोआ सा प्राणी,
घायल हुआ खून से लथपथ, फिर भी हार न मानी।
बढ़ने नहीं दिया नाग को, आखिर मार गिराया,
बच्चे की रक्षा कर उसने, अपना धर्म निभाया।

शाबासी पाने को माँ से, दरबाजे पर आया,
करने लगा प्रतीक्षा माँ की, बैठ वहीं सुस्ताया
बैठा इन्तजार करता था, गड़ी राह पर आँखें,
पण्डितानी को आते देखा, उसकी खिल गई बाँछे।

घड़ा उठाकर सिरपर अपने, बड़े-बड़े पग धरती,
बच्चा मेरा पूर्ण कुशल हो ईश्वर से विनती करती।
जल का घट लेकर पण्डितानी, जैसी ही घर आई,
उसे द्वार पर सना खून से, नकुल पड़ा दिखलाई।

मन में सोचा इस न्योले ने, शिशु को हानि पहुँचाई,
फैंका घड़ा नकुल के सरपर, दौड़ लगा अन्दर आई।
उसका बच्चा पूर्ण कुशल था, किन्तु नाग मरा पाया,
खून सना क्यों नकुल का चेहरा, सब कुछ साफ समझ आया।

छाती पीटे करती विलाप, न्योले को गोद उठाए,
बिना विचारे काम किया, अब चैन कहां से पाए।
इसलिए बच्चों मत करना, बिना विचारे कोई काम,
कभी नहीं पछताओगे तुम, यदि विवेक से लोगे काम।।

गीत-प्रभु की शरण में

चल उड़ जा रे पंछी, कि अब यह देह हुआ है पुराना
कितनी बार समझाया तुझको, फिर भी तू न माना
चल उड़ जा रे पंछी, कि अब यह देह हुआ है पुराना

प्रातः काल अमृतवेले ही, नींद छोड़ जग जाना,
ले प्रभु का नाम ओ बन्दे, अन्त समय नहीं पछताना
चल उड़ जा रे पंछी, कि अब यह देह हुआ है पुराना

यह मानव चोला मिला है तुझको, अच्छे कर्म कमाना,
संयम रख अपने मन पर प्राणी, मुक्ति को है पाना
चल उड़ जा रे पंछी, कि अब यह देह हुआ है पुराना

आत्मा तेरी पवित्र होवेगी, ओ३म् ही जयते रहना,
प्रभु ने तुझ को बहुत दिया है, उसका शुक्र बजाना
चल उड़ जा रे पंछी, कि अब यह देह हुआ है पुराना

काम, क्रोध, मद लोभ यह प्राणी, विकारों में न फंसना,
फस जायेगा इन विषयों में, फिर पड़े पछताना
चल उड़ जा रे पंछी; कि अब यह देह हुआ है पुराना

प्रभु बड़ा दयालु है प्राणी, उसकी शरण में जाना,
नहीं तो प्राणी भटक जायेगा, जीवन बार-बार नहीं पाना
चल उड़ जा रे पंछी, कि अब यह देह हुआ है पुराना

तेरा मेरा सम्बन्ध पुराना, कभी सोचा है या जाना
स्वासों का क्या है भरोसा, कब कहां रूक जाना
चल उड़ जा रे पंछी, कि अब यह देह हुआ है पुराना

दुःख सुख का साथी तेरा, सुख में सिमरण करना,
सुख में सिमरण करता प्राणी, दुःख निकट नहीं आना
चल उड़ जा रे पंछी, कि अब यह देह हुआ है पुराना

रामानन्द कहे सज्जनों से, ध्यान प्रभु में लगाना
प्रभु तेरा उपकार करेगा, प्रभु की शरण में जाना
चल उड़ जा रे पंछी, कि अब यह देह हुआ है पुराना

www.thearyasamaj.org

मेरी विदेश यात्रा

-श्रीमती सुदेश सन्दूजा, धर्मपूरा, बहादुरगढ़

मैं अपने पति श्री सतीश जी सन्दूजा के साथ 17 मई 2013 को 75 दिन की विदेश यात्रा के लिए अपने सुपुत्र समर सन्दूजा जो कि I.I.T Roorkee से Computer Engineer है और आजकल अपनी धर्मपत्नी पूजा के साथ अमेरिका में नौकरी कर रहा है। जाने से पहले हम दोनों आत्म-शुद्धि आश्रम में स्वामी धर्ममुनि ज़ी का आशीर्वाद लेने और आश्रमवासियों की शुभकामनाएं लेने गये। स्वामी जी ने मुझसे कहा कि सन्दूजा/अमेरिका का हाल लिखना हम पत्रिका में देगें। स्वामी जी का यह आज्ञा, मेरा एक सौभाग्य है। हमने अमेरिका की कुछ एक प्रांत जैसे वाशिंगटन डी.सी. Pennsilvania, New Jersy और New York आदि देखे। यहां की सबसे अच्छी बात यह देखी कि यहां पर कोई जात-पात ऊँच-नीच और काले गोरे का कोई भेदभाव नहीं है। सभी को समान अधिकार से देखा जाता है। प्रत्येक एक दूसरे की सहायता के लिए सदैव तैयार है। सभी कार्य सुचारू रूप से और सुव्यवस्थित है। प्रदूषण रहित शान्त वातावरण है। यहां प्रकृति को पूरी तरह से संभाला हुआ है। घने जंगलों में पहाड़ो को काटकर सुन्दर चौड़ी सड़के हैं। तरह-तरह के रंग-बिरंगे फूल और बड़े-बड़े पेड़ इसकी शोभा को बड़ाते है। सभी लोग अपना काम स्वयं करते हैं। किसी के घर कोई नौकर नहीं है। यहां पर घर लकड़ी के बने हुए हैं। इंसानों के काम को सराहा जाता है। यहां किसी उच्च अधिकारी को अलग से कोई Security प्रदान नहीं है। सभी एक समान है। सभी अपना कार्य लाइनों में आकर अपनी बारी का इन्तजार करते हुए करते है। Emergency Call पर Police और Fire Brigade तथा Ambulance केवल 2 मिनट में ही पहुंच जाती है। प्रत्येक घर के बाहर सुन्दर फूलों का बगीचा और अमेरिका का झन्डा दिखाई देता है। यहां का राष्ट्रीय नारा भी यही है। God Bless America, Long Live America राष्ट्रपति बाराक ओबामा का कहना है कि अमेरिका की उन्नति इन दो बातों पर टिकी है। 1. Dignity of Work 2. Human Respect 4 जुलाई को अमेरिका का Independence Day, Washington D.C. में देखा। वाइट हाऊस के पास रात को खूब आतिश बाजी हुई जिसे देखने आसपास के लाखों लोग जमा थे। हमने यहां के कुछ ऐतिहासिक और दार्शनिक स्थल देखे। सर्वप्रथम यहां का Niagra Falls देखा जो कि अमेरिका और कनाडा का बॉर्डर है। यहां 167' ऊँचाई से पानी गिरता है जिसका बहाव और मात्रा बहुत अधिक है। प्रकृति का अदभुत नज़ारा है। Statue of Liberty जो कि समुद्र के बीच में बना है। इसकी जमीन से ऊँचाई 305' तक है। जिसे सन् 1886 में फ्रांस ने गिफ्ट किया था। वाइट हाऊस देखा जो कि सन् 1800 से अब तक के सभी राष्ट्रपति का यही निवास स्थान रहा है। जिसकी छटा आकर्षक और अद्वितीय है। न्यूऑर्क का Times Square जहां पर गगन चुम्बी इमातरें हैं। रोशनी की चकाचौंध है। यहां पंजाब से आए सिक्खों ने अपनी खूब जगह बना रखी है। उनका गुरुद्वारा भी देखा। Indian Stores या तो सिक्खों के हैं या फिर गुजराती लोगों के New Jersy में आर्य समाज मन्दिर देखने गये। जिसे देखने की मन में एक तीव्र इच्छा थी। जिसे देख कर दिल खुशी से झूम उठा। बाहर ओ३म् का झन्डा और कृणवन्तो विश्वआर्यम पढ़कर मन बहुत प्रसन्न हुआ। अन्दर छोटी सी जगह में प्यारी सी यज्ञशाला को बड़ी खूबसूरती से सजा रखा है। यहां का आर्यसमाज एक संस्था की तरह काम करता है। जरूरतमन्द लोगों की मदद करना इनका एक उद्देश्य है। सन्ध्या, हवन की किताबें इंगलिश में लिखी हुई हैं। यह देखकर प्रसन्नता हुई कि आर्य समाज इतनी दूर भी अंग्रेजों के बीच जीवित है। "वैदिक धर्म की जय"।

साधकों के लिए स्वर्णिम अवसर

अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम फर्रुखनगर गुड़गांव में दूषित वातावरण से दूर सुरम्य स्थान पर आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित शौचालय, रसोई स्नानगृह आदि से युक्त योग-साधकों की साधना के लिए बाहर एवं भूमिगत कमरे उपलब्ध हैं। आप सादर आमन्त्रित हैं।

कृपया सम्पर्क करें:- 9416054195, 9812640989, 9813754084

www.thearyasamaj.org

वंदे मातरम की शब्द शक्ति

-डा. मधुसूदन

मातृभूमि की भक्ति जगाने की शक्ति मातृभूमि के प्रति भक्ति-भाव जगाने की शक्ति, जिस गीत के शब्दों में कूट कूट कर भरी हुयी है, ऐसे वंदेमातरम का सामुहिक गान जब सम्पन्न हुआ, तो एक ओर, पंक्तियाँ गायी जा रही थी, जिसके बोल थे-

शुभ्र ज्योत्स्ना पुलकितयामिनी,
फुल्लकुसुमित द्रुमदलशोभिनीम्,
सुहासिनीं सुमधुरभषिणीम्,
सुखदां वरदां मातरम्।
वन्दे मातरम् ॥2॥

तो दूसरी ओर, मन में विचार मँडरा रहे थे, सोच रहा था, कि कैसे कैसे शब्दों को चुन चुन कर बंकिम ने इस गीत को रचा है?

पुलकितयामिनीं, द्रमदलशोभिनीं, सुहासिनीं, सुमधुरभाषिणीं इसी भांति, प्रत्येक पंक्ति में नीम् या णीम् से अंत होनेवाला प्रास आता है, और वातावरण में एक गूंज तैर जाती है। (दो) दृश्यों की परम्परा गीत या कविता में एक ऐसी परम्परा है, जो दृश्यों को क्रमवार खड़ा करते हुए पूरा दृश्य चक्षुओं के सामने ला देती है। ऐसी परम्परा का अवलंबन करते हुए, इस कड़ी में बंकिम ने पहले भारत का एक दृश्य खड़ा करने के लिए शुभ्र (ज्योत्सना) चांदनी से रोमांच (पुलक) खड़े करने वाली (यामिनीं) रात्रियाँ लायी। फिर खिले हुए (फुल्लकुसुमित) फूलों से लदे वृक्षों के (द्रम-दल) वृंद से शोभित दृश्य लाए। हंसमुखी (सुहासिनीं) और मधुर भाषी (सुमधरुभाषिणीयाँ) महिलाओं का दृश्य लाया और अंत में भारत माता का (सुखदां) सुखदेनेवाली, (वरदां) आशीष देनेवाली माँ, ऐसा वर्णन किया।

कुछ पुनरावृत्ति के दोष सहित, लेखक कहने को ललचाता है कि सोचिए शुभ्र चांदनी से युक्त रात्रियों के कारण हर्ष-भरे रोमांच खड़े कर, पुलक जगानेवाली-इतना सारा आशय, संदर्भ सहित व्यक्त करने के लिए, मात्र शुभ्र ज्योत्स्ना पुलकितयामिनी शब्द पर्याप्त हैं।

और फुल्लकुसुमित द्रुमदल शोभिनीं मात्र से, खिले हुए फूलों से युक्त वृक्षों के वृंद (झुंड) जहाँ भूमि की, शोभा बढ़ाते हैं। व्यक्त हो जाता है। ऐसी संक्षेप में अभिव्यक्ति की शक्ति को भाषा का महत्वपूर्ण गुण (शायद (महत्तम गुण) येनिश ने भी माना है। साथ में देववाणी की परम्परापूत आभा भी इस शब्द-गुच्छ को, भक्ति से ओतप्रोत कर देती है।

(तीन) प्रास का चमत्कार पुलकितयामिनीं, द्रमदलशोभिनीं, सुहासिनीं, सुमधुरभाषिणीं इसी भाँति, प्रत्येक पंक्ति में-नीम् या-णीम् से अंत होनेवाला प्रास आता है, और वातावरण गूंज उठता है।

यह प्रास का चमत्कार है ही, यह अवश्य बंकिम का योगदान है, पर ऐसे प्रास की उपलब्धि संस्कृत प्रत्ययों के कारण ही संभव है। तो यह पाणिनि का भी योगदान है। देववाणी का योगदान है।

ऐसी सरस पंक्तियां, एक गूढ़-सी कूक जगा देती है। यह शक्ति देववाणी की नहीं, तो और किसकी है? अंग्रेजी में ऐसे प्रास इतनी सरलता से ही क्यों, उपलब्ध है ही नहीं। सोचिए

(चार) पहली कडी के शब्द वैसे गीत की पहली कड़ी में प्रयुक्त शब्द हैं। सुजलाम=निर्मल जल (नदियों) वाली (भूमि)। सुजलाम्=निर्मल जल (नदियों) वाली (भूमि)। सुफलाम्=सुंदर फलों से (लदे हुए वृक्षों वाली भूमि)। मलयज शीतलाम्=मलय पर्वत के चंदन से सुगंधित पवन युक्त भूमि। शस्यश्यामलाम्=फसल से श्यामल रंग प्राप्त भूमि।

इस मालिका में, निर्मल जल वाली नदियों का दृश्य हैं। फिर सुंदर फलों से लदे हुए वृक्ष आते हैं। और मलयगिरि से चंदन सुगंधित पवन यह रहा है। अंत में, फसल से श्यामल रंग प्राप्त शस्य श्यामलाम् भूमि, ऐसे दृश्यों से बंकिम रचना प्रारंभ करता है और बार बार धुपद, गाया जाता है, वंद मातरम्।

(पाँच) प्रेरणा का कारण। एक कारण मुझे लगता है, कि, गीत के स्वर, जो शास्त्रीय राग देश में डूबे हैं, वह हैं। अनेक गायकों ने, इस गीत को अन्य रागों में भी गाया है। हेमंत कुमार, एम एस सुब्बा लक्ष्मी, लता मंगेशकर आदि ने, अलग-अलग रागों में इस गीत को गाया है। किसी ने 'राग'

www.thearyasamaj.org

'काफी' में, किसी ने, मिश्र खंभावती में, किसी ने 'बिलावल' में, किसी ने, बागेश्वरी में, किसी ने 'झिंझौटी' में और अन्य कुछ गायको ने इस गीत को, कर्नाटक शैली के रागों में भी गाया हुआ है। शास्त्रीय रागों में विशिष्ट भाव जगाने की शक्ति सर्व-विदित है।

(छः) निःशब्द में डूबा देना। रागदारी की भी एक और विशेषता होती है। बिना शब्दों की रागदारी आप को निःशब्द में डूबा देती है और निःशब्द अवस्था के पार जा कर ही समाधि में जाया जाता है। जब तक आप शब्द में लिपटे होते हैं, तब तक आप इस संसार में लिप्त होते हैं। इस संसार से ऊपर उठने के लिए आप को संसार से, अपना संबंध काटना पड़ता है। आपका संबंध इस जगत से मन द्वारा, और मन का शब्द द्वारा जुड़ा होता है।

जब बिना शब्द ही स्वर ताना जाता है, खींचा जाता है, तो कुछ क्षणों के लिए, आँखे बंद होकर, ध्यान समाधि लग जाती है।

सुना होगा ही आपने कि जब गान सम्राज्ञी लता जी, मुखड़े के अंत में- माऽऽऽऽऽऽऽ को खींचती और लम्बा कर लहराते हुए अंत में ऽऽ तरम् पर अंत करती है, तो एक अलौकिक रोमांचकारी पुलक की अनुभूति होती है।

(सात) एक और कारण और एक कारण यह प्रतीत होता है, कि आध्यात्मिक वाणी, संस्कृत शब्दों की पंक्ति पंक्ति में जो गूंज होती है, उस गूंज से ही व्यक्ति ध्यान में चली जाती है।

यही है संस्कृत शब्दों का चमत्कार। वैसे कुछ पहलू विश्लेषण से परे ही होंगे, पर इस गूंज से, मस्तिष्क के दोनों गोलार्ध, चमकना प्रारंभ हो जाते हैं। ऐसा साम्प्रत पढ़े हुए, शोधापत्रों से पता चलता है। जिनमें प्रयोग द्वारा इस सच्चाई को प्रमाणित करने का विवरण मिलता है। यह चमत्कार मेरी प्रामाणिक जानकारी के अनुसार, किसी अन्य भाषा के शब्दों में नहीं है और होगी तो भी इतनी मात्रा में तो निश्चित नहीं है।

(आँठ) प्रत्यय के और उदाहरण अनायास एक प्रत्यत के काफी उदाहरण इस कविता में आ गये हैं। पुलकितयामिनीं, द्रमदलशोभिनीं, सुहासिनीं, सुमधुरभाषिणीं, विहारिणीम्, बाहुल धारिणीं, रिपुदल वारिणीं तारिणीं, धरणीं, भरणीं इत्यादि इसी गीत के सूर्ययसहित शब्दों के उदाहरण होंगे। इन्हीं की भांति और विशेषण और अन्य शब्द भी बनाए जा सकते हैं। जिसकी सूची अगले परिच्छेद में, प्रस्तुत है, बिना कोई विश्लेषण।

(नौ) सूचीः यह सूची आप को हमारी शब्द शक्ति के प्रति आश्वत करने में सहायक होंगी।

(क) धारिणी, अंजनी, रागिणी, मोहिनी, मालिनी, हिमानी, शिवानी, कमलिनी, नलिनी, यामिनीं, शोभिनीं, भवानी, गंधिनी, पद्दिनी, जननी

(ख) मर्दिनी से जोड़ कर, असुरमर्दिनी, रिपुमर्दिनी, महिषासुरमर्दिनी, ऐसे शब्द बना सकते हैं।

(ग) अंगिनी से जोड़ कर कनकांगिनी, रत्नांगिनी, हेमागिनी, सुगंधागिनी,

(घ) दायिनी से जोड़कर वरदायिनी, जयदायिनी, विजयदायिनी, शुभदायिनी, सुखदायिनी, (ड) इसीका अर्थ का अलग रूप सुखदा, शुभदा, वरदा, (च) भाषिणी से जोड़कर सुभाषिणी, मधुभाषिणी, मंजुभाषिणी, (छ) वासिनी से जोड़कर विध्यवासिनी, गिरिवासिनी, ग्रामवासिनी, नगरवासिनी,

(छ) सिंहवाहिनी, हंसवाहिनी,

(ज) निर्झरिणी शैवलिनी, तरङ्गिणी विहारिणी, सुहासिनीं, तटिनी, धरणीं, भरणीं, दामिनी, मंदाकिनी, सौदामिनी, संवादिनी, सुशोभिनी, पुष्करिणी, तपस्विनी, पर्यस्विनी,

(झ) तट विहारिणी, पवनपावनी, योगिनी, धर्मचारिणी, चित स्वरूपपिणी, अंतर्यामिनी, स्फूल्लिगिनी, सारे शब्द स्त्रीलिंगी होने के कारण बालाओं के नामो में प्रयोजे जाते हैं।

आपकी सुविधा हेतु

आप आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ द्वारा संचालित विभिन्न प्रकल्पों हेतु अपना पावन दान निम्नलिखित खाते में सीधा जमा कराकर पुण्य के भागी बन सकते हैं–

बैंक	नाम व खाता संख्या	बैंक कोड संख्या
इलाहाबाद बैंक, रेलवे रोड, बहादुरगढ़,झज्जर	आत्म शुद्धि आश्रम 20481946471	IFSC-A0211948

www.thearyasamaj.org

आश्रम द्वारा संचालित विविध प्रकल्पों हेतु 500/- से अधिक प्राप्त दान सूची

अन्न एवं अन्नार्थ प्राप्त दान

श्रीमती प्रेमो देवी, मूर्ति देवी, सोनीपत, हरियाणा (यज्ञ हेतु)	62615/-
श्री वीरेन्द्र सिंह आर्य, दौलताबाद, गुड़गांव	51000/-
श्री सतीश खन्ना रोशन आरा रोड, दिल्ली (भोजनार्थ)	25600/-
श्री राजेश जून जी (जिला वाईस चेयरमैन)	21000/-
श्री अमरीश कुमार झाम, गुड़गांव	20000/-
श्री रमन भटेजा सुपुत्र चन्द्रप्रभा भटेजा	12000/-
श्री एम.एम. कौशाल जी, गुड़गांव	12000/-
वानप्रस्था सुकृतियति द्वारा संग्रह	11800/-
श्री बलवान सिंह सुपुत्र श्री पतराम स्वामी साल्हावास	11000/-
डॉ. अशोक कुमार जी चौहान, डिफेन्स कॉलोनी, न. दिल्ली	11000/-
श्री एम. एम. कौशल जी, गुड़गांव हरियाणा	11000/-
श्री ओम प्रकाश जी कथुरिया, गुड़गांव, हरियाणा	11000/-
श्री जे.के. जी मेहता, गुड़गांव, हरियाणा	11000/-
श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री, दिल्ली	10000/-
अनिश भल्ला सुपुत्र मनीष जी भल्ला गुलमोहर पार्क, न.दि.	5551/-
सावित्री एवं हीरालाल चावला विवेक एवं दीपशिखा पश्चिम विहार, दिल्ली	5100/-
श्री हर्ष मुन्जाल पत्नी श्री योगेश जी मुंजाल ग्रेटर कैलाश, दि.	5100/-
श्री संजीव जी सिक्का न्यू फ्रैन्ड्स कॉलोनी, न. दिल्ली	5100/-
श्री रवि खत्री जी, चेयरमैन नगर परिषद, बहादुरगढ़	5100/-
श्रीमती शबनम जून पत्नी विधायक श्री राजेन्द्र जून, बहादुरगढ़	5100/-
श्रीमती सीमा पाहुजा पत्नी पवन पाहुजा निगम पार्षद, गुड़गांव	5100/-
श्री सतीश छिकारा जी (चेयरमैन जिला परिषद्, झज्जर)	5100/-
श्री अशोक गुप्ता जी (पूर्व चेयरमैन, नगर परिषद्, बहादुरगढ़	5100/-
श्री नाहर सिंह जी अम्बेडकर कॉलोनी, बिजवासन, दिल्ली	5100/-
श्री विकास बंसल रोहिणी, दिल्ली	5100/-
श्रीमती निर्मला देवी पत्नी स्व. नत्थुराम जी शर्मा, बहादुरगढ़	5000/-
श्री नवनीत गुप्ता जी पंजाबी बाग, बिस्तार	5100/-
श्री प्रेम प्रकाश जी गुप्ता, देवनगर, दिल्ली	3000/-
श्री महावीर जी बत्रा, आदर्श नगर, दिल्ली	3100/-
श्रीमती कृष्णा डाबर न्यू फ्रैन्डस कॉलोनी, नई दिल्ली	3100/-
श्री गुलशन कुमार सैक्टर-6, बहादुरगढ़	3000/-
श्री रविन्द्र जी गुप्ता, पश्चिमी पंजाबी बाग, दिल्ली	2200/-
श्रीमती मनीषा मल्होत्रा जी पश्चिमी पंजाबी बाग, दिल्ली	2100/-
श्रीमती सुदेश कालड़ा, पश्चिम बिहार, दिल्ली	2100/-
श्री धर्मदेव खुराना, रोहिणी, दिल्ली	2100/-
श्री सुरेन्द्र जी बुद्धिराजा, कीर्तिनगर, दिल्ली	2100/-
श्री एस.के. मेहता जी गुड़गांव	2100/-
श्री सुधांशु जी मल्होत्रा, गुड़गांव	2100/-
श्री युवराज छिल्लर, नगर पार्षद, बहादुरगढ़	2100/-
श्री प्रमोद मल्होत्रा पंजाबी बाग, विस्तार दिल्ली	2100/-
ट्रक यूनियन बहादुरगढ़	2100/-
श्रीमती सोना आर्या महिला एवं बालविकास अधिकारी, झज्जर	2100/-
डा. सुभाष नागपाल, झज्जर	2100/-
तन्वी मलिक सुपुत्री विनोद मलिक ग्रेटर कैलाश, न.दिल्ली	2100/-
बीरमा देवी आजादपुर, दिल्ली	2100/-
स्व. सुबेदार शिव नारायण जी, बहादुरगढ़	2100/-
आर्य केन्द्रिय सभा गुड़गांव	2100/-
श्री आर्यन मेडिकेयर शिवाजी नगर, गुड़गांव	2100/-
श्री विद्यामित्र जी ठुकराल, ग्रीन पार्क, नई दिल्ली	2100/-
श्री सुरेन्द्र इन 1508/6, बहादुरगढ़	2100/-
श्री आदित्य आनन्द जी सु. श्री अनिल वीर आनन्द, कीर्तिनगर	2100/-
श्री आनन्द कुमार गुप्ता, शालीमार बाग, दिल्ली	2100/-
श्रीमती सुधा आर्या पत्नी श्री सुरेन्द्र आर्य रोहिणी, दिल्ली	2100/-
श्री लाला प्रकाशवीर जी, झज्जर	2100/-
श्रीमती कृष्णा देवी गुड़गांव	2000/-
रवि जी अर्न्जान, प्रोपट्रीज, सैक्टर-6, बहादुरगढ़	2000/-
स्व. डा. श्री भगवान्, श्रीमती मधु कबीर आश्रम, बहादुरगढ़	2000/-
श्री मदनलाल जी रेलन, कृष्णा कॉलोनी, गुड़गांव	1800/-
बस यात्री केन्द्रिय सभा, गुड़गांव	1511/-
श्रीमती दर्शना खन्ना रोशन आरा रोड, दिल्ली	1500/-
मानकटाला परिवार पूर्वी पंजाबी बाग, दिल्ली	1200/-
श्री देशराज जी, सैक्टर-6, बहादुरगढ़	1200/-
श्री अशोक जून, नूनामाजरा	1111/-
आर्य समाज, पूर्वी पंजाबी बाग, दिल्ली	1100/-
माता आशा जी याज्ञिका पश्चिम बिहार, दिल्ली	1100/-
श्री निर्मला आर्या, गुड़गांव	1100/-
श्री कर्नल राजेन्द्र सहरावत, सैक्टर-6, बहादुरगढ़	1100/-
श्री मा. ब्रह्मजीत आर्य, सैक्टर-6, बहादुरगढ़	1100/-
श्री सत्यपाल जी वत्स आर्य काठमण्डी, बहादुरगढ़	1100/-
श्री संजय कुमार जैन, पंजाबी बाग दिल्ली	1100/-
श्रीमती सुलक्षण गुप्ता, पश्चिम बिहार, दिल्ली	1100/-
श्री रामफुल जी एडवोकेट, बहादुरगढ़	1100/-
श्री बलदेव राज जिंदल (पूर्वी पंजाबी बाग, दिल्ली)	1100/-
श्री विजेन्द्र भाटिया, महावीर पार्क, बहादुरगढ़	1100/-
श्री रवीन्द्र सुपुत्र श्री रामधन शर्मा, बहादुरगढ़	1100/-
श्री योगराज जी रल्ली, मयूर विहार, दिल्ली	1100/-
श्रीमती दयावती आर्या रोहिणी, दिल्ली	1100/-
श्री समर सन्दुजा सुपुत्र सतीश सन्दुजा अमेरिका	1100/-
श्री यशपाल जी कामरा शिवाजी नगर, गुड़गांव	1100/-
श्रीमती वेदवती आर्या प्रधाना आर्य समाज, मुरादपुर, टेकना	1100/-
श्री अशोक कुमार सचदेवा, रोहिणी दिल्ली	1100/-
श्री रामभज, सैक्टर-6, बहादुरगढ़	1100/-
श्रीमती मायावती मदान, धर्मपुरा, बहादुरगढ़	1100/-
श्री जयदेव जी, हसीजा, गुड़गांव	1100/-
श्री दिवांश जी, सैक्टर-2, बहादुरगढ़	1100/-
डा. सुनीता दहिया जी बराही रोड़, बहादुरगढ़	1100/-
श्री तिलक राज जी गुलाटी सन्त कॉलोनी, बहादुरगढ़	1100/-
माता स्नेहतुली जी, पश्चिम विहार, दिल्ली	1100/-
श्रीमती सुमन अहलावत, पश्चिम विहार, दिल्ली	1100/-
श्री आनन्द प्रकाश जी भारद्वाज, पश्चिम विहार	1100/-
सुनीता शास्त्री पत्नी श्री दयानन्द अध्यापक रेवाड़ी	1100/-
आर्य धर्मार्थ ट्रस्ट द्वारा पदमचन्द आर्य, गुड़गांव	1100/-
श्री पूर्ण सिंह सुपुत्र श्री नौरंग सिंह टीकरी, दिल्ली	1101/-
श्री राम कुमार जी दहिया नया रोशनपुरा, नजफगढ़	1100/-
चौधरी कर्णसिंह शौकिन परिवार, गुड़गांव	1100/-
श्री रवि कुमार, नेहरूपार्क, बहादुरगढ़	1100/-
श्री इन्द्रदेव जी गुलाटी, टीचर कॉलोनी, बहादुरगढ़	1100/-
श्री विजेन्द्र नम्बरदार, रूप गार्डन, बहादुरगढ़	1000/-
श्रीमती कौशल्या देवी, गुड़गांव	1000/-
श्री जयदेव जी हसीजा, गुड़गांव, हरियाणा	1000/-
श्रीमती रामदुलारी बंसल, वैदिक वृद्धाश्रम	1000/-
जे.के. मैमोरियल ट्रस्ट मोगा, पंजाब	1000/-
विमला आर्या, कालका जी दिल्ली	1000/-
मा. दलवीर सिंह, सैक्टर-2, बहादुरगढ़	510/-
नेहरू पार्क, बहादुरगढ़ (जन्मदिवस पर)	505/-

www.thearyasamaj.org

श्री धर्मवीर जी जुन, बहादुरगढ़	500/-
श्रीमती चन्द्र वर्मा पत्नी श्री आर्य तपस्वी, दिल्ली	500/-
मा. धूपसिंह वैदिक, वृद्धाश्रम, बहादुरगढ़	500/-
श्रीमती जयदेवी जनकपुरी, दिल्ली	500/-
श्री प्रकाश दहिया, लाजवन्ती दहिया, विवेकानन्द नगर	500/-
श्री रणबीर सिंह, लोहारहेड़ी	500/-
श्री अमरसिंह आर्य मन्त्री, आर्यसमाज, उत्तम नगर	500/-
आर्य समाज, माडल टाऊन, रोहतक	500/-
श्री रामलुभाया बत्रा, आर्यसमाज माडल टाउन, रोहतक	500/-
मा. रणवीर सिंह सुपुत्र श्री राजेश छिल्लर,	500/-
श्री राजेश राठी, सैक्टर-6, बहादुरगढ़	500/-
आर्य समाज झज्जर रोड, बहादुरगढ़	500/-
श्री मदनमोहन सलुजा, पंजाबी बाग, बिस्तार दिल्ली	500/-
ऋषिका जनकपुरी, दिल्ली	500/-
श्री प्रवीन कुमार जी झज्जर रोड, बहादुरगढ़	500/-
श्री कर्णवीर जी सहरावत दयानन्द नगर, बहादुरगढ़	501/-
श्री हरिसह जी टीचर कॉलोनी, बहादुरगढ़	500/-
विजेन्द्र हुड्डा दयानन्द नगर, बहादुरगढ़	500/-
श्री रोहित, हिमांशु कश्मीरी कॉलोनी, बहादुरगढ़	500/-
श्री विनोद जी नजफगढ़, दिल्ली	500/-
स्त्री आर्य समाज पंजाबी बाग, पश्चिमी	500/-
श्रीमती उषा सिंह पश्चिम विहार, दिल्ली	500/-
श्री सुरेन्द्र सिंह बीड़, सुनारवाला, झज्जर	500/-
डॉ. रघवीर सिंह नागपाल, झज्जर	500/-
श्री श्यामजी गुलाटी पश्चिम बिहार, दिल्ली	501/-
श्री राजेन्द्र कुमार लाबाजी, पश्चिम बिहार, दिल्ली	500/-
श्री सतवीर राठी सैक्टर, बहादुरगढ़	500/-
श्री ओ.पी. सहरावत, नेहरू पार्क, बहादुरगढ़	501/-
श्री राजकरण जी (प्रधान) आर्य समाज बादली	500/-
श्री तेजपाल सिंह, पश्चिम बिहार, दिल्ली	501/-
श्रीमती कमलेश गुलाटी, पश्चिम बिहार, दिल्ली	501/-
श्रीमती कमलेश गुलाटी, पश्चिम बिहार, दिल्ली	501/-
श्री विनोद सलुजा, कीर्तिनगर दिल्ली	500/-
श्री सुमन ढक्कर वंशज, कीर्तिनगर, दिल्ली	501/-
शीतल वधवा कीर्तिनगर, दिल्ली	501/-
श्रीमती रूकमेश सैक्टर-6, बहादुरगढ़	500/-
श्री राजवीर जी आर्य धर्मविहार, बहादुरगढ़	500/-
श्रीमती सविता गिरधर, पश्चिम बिहार, दिल्ली	500/-
श्री विवेक गुप्ता जी, पश्चिम विहार, दिल्ली	500/-
श्री प्रीतमदास तनेजा जी, पश्चिम विहार, दिल्ली	501/-
श्री चुघ परिवार जी, पश्चिम विहार, दिल्ली	500/-
माता सुभाष कण्व, पश्चिम विहार, दिल्ली	500/-
श्रीमती प्रेम छाबड़ा, पश्चिम विहार, दिल्ली	500/-
कुमारी महिमा, सचदेवा पश्चिम विहार, दिल्ली	500/-
मधु अरोड़ा, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली	500/-
माता तृप्ता कक्कड़, मयूर विहार, नई दिल्ली	500/-
लक्ष्मी देवी बराही रोड, बहादुरगढ़	500/-
श्री मुकेश जी एस.डी.ओ., बहादुरगढ़	500/-
श्री केशव वर्मा जुलाना	501/-
श्री सुदर्शन लाल खन्ना, सैक्टर-6, बहादुरगढ़	501/-
श्री वरूण सुपुत्र महावीर सिंह, सैक्टर-7, बहादुरगढ़	500/-
श्री जवाहर वाटर संजय नगर, गाजियाबाद	500/-
पुत्री चर्यनिश चौधरी गुड़गांव	500/-

विविध वस्तुएं

श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री, जवाहर नगर, दिल्ली-4	4 बड़ी दरी
स्व. श्री रणबीर सिंह रेहड़ी	1 कट्टा बाजरा, 500 रूपये
श्री विनोद कादयान दयानन्द नगर, बहादुरगढ़	10 किलो आटा
श्री महेन्द्र सिंह सुपुत्र श्री मुंशीराम लाला सांपला	2 कट्टे गेंहू
दीपाली गारमेन्ट्स, रेलवे रोड, बहादुरगढ़	40 किलो दाल
श्री उमेद सिंह डरोलिया, काठमण्डी, बहादुरगढ़	100 किलो चावल
श्री लाल रामेश्वर दास जी, नांगलोई	50 किलो चावल
फरिश्चता सॉफ एण्ड चरखा कै फैक्ट्री	200 रूपये 2 पेटी साबुन
श्री सुरेन्द्र सिंह बीड़, सुनारवाला, झज्जर	2 कट्टे गेहूं
श्रीमती विद्यादेवी पत्नी स्व. बनारसी दास	40 तोलियां
श्री अशोक बंसल शास्त्री मार्किट, दिल्ली	50 किलो चावल
दलाल डेरी, बहादुरगढ़	15 किलो साबुन, 18 दन्तपेस्ट
श्री भूप सिंह डबास शनिमन्दिर, टीकरी	1 टीन तेल
मनीष कुमार दयानन्द नगर, बहादुरगढ़	15 किलो गेहूं
श्री ओम अहलावत, आर्य नगर	1 टीन घृत
पुरी ऑयल, मील बहादुरगढ़	1 टीन रिफाइन्ड
तन्मय सुपुत्र अमित कुमार दयानन्द नगर,	10 किलो आटा, 5 किलो आलु
श्री जे.के. अग्रवाल, बैंक कॉलोनी, बहादुरगढ़	3 कट्टे चावल
फरिश्ता शोप एण्ड चरखा केमिकल्स,पंजाबी बाग	2 पेटी साबुन, 200/-

गौशाला हेतु प्राप्त दान

सत्यपाल जी बहादुरगढ़	1000/-
सुशील कुमार जी जैन बहादुरगढ़	20500/-
श्री माता कृष्णा झाम, गुड़गांव	2500/-
निर्मला देवी पत्नी स्व. नत्थुराम जी शर्मा, बहादुरगढ़	1000/-
श्री सतगुरु मार्बल, बराही रोड, बहादुरगढ़	500/-
शान्ति देवी, सैक्टर-6, बहादुरगढ़	2100/-
उमेद सिंह डरोलिया, काठमण्डी, बहादुरगढ़	50 किलो दलिया
प्रदीप सिंह राणा ग्राम घेवरा, दिल्ली	1 ट्राली तुड़ा, 30100/-

भोजनार्थ प्राप्त दान

श्री सत्यपाल जी वर्मा लाईनपार, बहादुरगढ़	एक समय का विशिष्ट भोजन
श्री आर.पी. श्रीवास्तव, एच.एम.आई.	2 समय का विशिष्ट भोजन
कबीर आश्रम, लाईन पार, बहादुरगढ़	एक समय का विशिष्ट भोजन तौलिया और साबुन वितरण
श्री बल्लाराम प्रधान काठमण्डी, बहादुरगढ़	एक समय का विशिष्ट भोजन
श्री बृजलाल सहगल	एक समय का विशिष्ट भोजन
श्री दयाकिशन रोशनी, काठमण्डी, बहादुरगढ़	एक समय का विशिष्ट भोजन
श्री योगेन्द्र जी वत्स श्रीमती मिश्री देवी ज्ञान निकेतन, श्याम विहार, दिल्ली	एक समय का विशिष्ट भोजन
श्रीमती सुमन अहलावत, पश्चिम विहार,	एक समय का विशिष्ट भोजन
श्री एम. एम. कौशल	दो समय का विशिष्ट भोजन

मुद्रक व प्रकाशक : स्वामी धर्ममुनि 'दुग्धाहारी', सम्पादक एवं मुख्याधिष्ठाता-आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, जिला-झज्जर (हरियाणा), पिन-124507 द्वारा मयंक प्रिन्टर्स, 2199/64, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली-110005, दूरभाष-41548503, चलभाष-9810580474 से मुद्रित, आत्म-शुद्धि-पथ कार्यालय-आत्मशुद्धि आश्रम से 15 अक्टूबर 2013 को प्रकाशित एवं प्रसारित।

www.thearyasamaj.org

47वें आश्रम स्थापना दिवस समारोह की झलकियां

मंच संचालनकर्त्ता श्री राजवीर जी आर्य का स्वागत करते हुए श्री सत्यपालजी वत्स

श्री राजेश जी जून (जिला वाईस चेयरमैन, झज्जर) उद्बोधन देते हुए

श्री अशोक गुप्ता जी (पूर्व चेयरमैन, नगर परिषद्, बहादुरगढ़) उद्बोधन देते हुए

श्री रवि खत्री जी (चेयरमैन, नगर परिषद्, बहादुरगढ़) उद्बोधन देते हुए

श्री स्वामी रामानन्द जी उद्बोधन देते हुए

श्री सतीश छिकारा (चेयरमैन जिला परिषद्, झज्जर) उद्बोधन देते हुए

वार्षिक उत्सव में उपस्थित भक्तजन

वार्षिक उत्सव में उपस्थित भक्तजन

www.thearyasamaj.org

आत्म – शुद्धि – पथ मासिक

अक्टूबर 2013

छपी पुस्तक – पत्रिका

एच.ए.आर.एच.आई.एन/2003/9646

पंजीकरण संख्या पी/रोहतक-035/2012-14

प्रेषक – आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़, झज्जर (हरियाणा)-124507

सेवा में –

47वें आश्रम स्थापना दिवस पर यज्ञ की झलकियां

यज्ञ ब्रह्मा, वेदपाठी, वैदिक विद्वान, संन्यासीगण एवं मुख्य यजमान

यजमान श्री अमरीश जी झाम, माता कृष्णा झाम एवं श्रीमती रोशनी देवी, शान्ता अध्यापिका

मुख्य यजमान श्रीमती प्रेमो देवी, श्रीमती मूर्ति देवी माता सुकृतिप्रीति एवम् माता गायत्री देवी

खुराना परिवार रोहिणी, दिल्ली यज्ञ करते हुए

यजमानों को आशीर्वाद देते हुए स्वामी धर्ममुनि जी

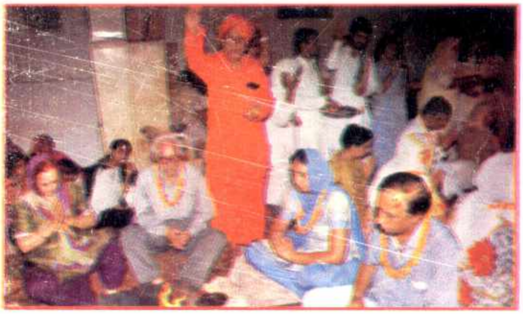

यजमानों को आशीर्वाद देते स्वामी रामानन्द जी